डाक पंजीयन संख्याः एडी.306/2003–05

साहित्य मेला दिंः 28 व 29 मई 2005

२८ मई २००५ दिन शनिवार :

प्रथम सत्रः स्व० डा० महराज कृष्ण जैन जी को समर्पित अखिल भारतीय पत्र-पत्रिका व पुस्तक प्रर्दशनी का उद्घाटन

द्वितीय सत्रः हिन्दी मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' व जी.पी.एफ.सोसायटी के सहयोग से देश के कोने कोने से आयें साहित्य सेवियों व समाज सेवियों का साहित्य श्री, समाज श्री, विश्व स्नेह समाज पत्रकारिता सेवा सम्मान सहित लगभग ५० से अधिक सम्मानों से सम्मान

अंतिम सत्रः काव्य गोष्ठी (राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कवियों द्वारा)

२९ मई ०५ दिन रविवार

प्रथम सत्रः पत्र-पत्रिकाओं की स्थिति पर चर्चा

द्वितीय सत्रः तारिका विचार मंच प्रयाग व भारतीय ग्रामीण पत्रकार महासंघ द्वारा साहित्य प्रेमियों का सम्मान

डॉ० भगवान प्रसाद उपाध्याय
राष्ट्रीय संयोजक, भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार
महासंघ एवं तारिका विचार मंच

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी (कार्यक्रम संयोजक)
संपादक, विश्व स्नेह समाज, प्रांतीय संगठन मंत्री, भारतीय
ग्रामीण पत्रकार महासंघ, सचिव, जी.पी.एफ.सोसायटी

दाउजी का है कहना, हर अनाथ व वृद्ध है मेरा अपना

स्व0 महेन्द्र प्रताप सिंह पुस्कालय

स्नेहालय
(अनाथाश्रम एवं वृद्धाश्रम)

सूचना और सहयोग आपका, परवरिश हमारी

अगर आपकी नजर में कोई अनाथ १८ वर्ष से कम उम्र का दिखाई पड़ जाए, कोई वृद्ध/वृद्धा जिसका कोई सहारा न हो मिले कृपया हमें नीचे दिये पते पर सूचित करें

आपका छोटा सहयोग, आपका छोटा सा पैसा, कर सकता है आपके किसी भाई-बहन, बुर्जूग की सेवा

जी, हॉ, आप मात्र एक रूपये में किसी की उजड़ी जिन्दगी में फर्क ला सकते हैं.

मैं एक बच्चे की पढ़ाई के लिए/असहाय की सेवा के लिए/विधवा के लिए/ बृद्ध के लिए रु० ३०/-प्रति माह (रु० ३६०/-वार्षिक) जी.पी.एफ.सोसायटी के नाम से भेंज रहा हुं.

नाम : ....पिता का नामः ....व्यवसायः..............................
पताः..मैं एक बच्चे की पढ़ाई/असहाय की सेवा/विधवा/बृद्ध के लिए रुपये ....(शब्दों में)..मनिआर्डर/बैक ड्राफ्ट भेज रहा हुं.

ग्रामः टीकर पोस्टः टीकर (पैना) जिलाः देवरिया, उ0प्र0 में
निर्माणाधीन अनाथ एवं बृद्धा आश्रम में सहयोग करें

पंजीकृत कार्यालयः
प्रबंधक, जी.पी.एफ. सोसायटी,
एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी,
मुण्डेरा, इलाहाबाद–11

R.N.I.N0.-UPHIN2001/8380

वर्ष 4, अंक 8, इलाहाबाद

विश्व स्नेह समाज

मूल्य 3 रुपये

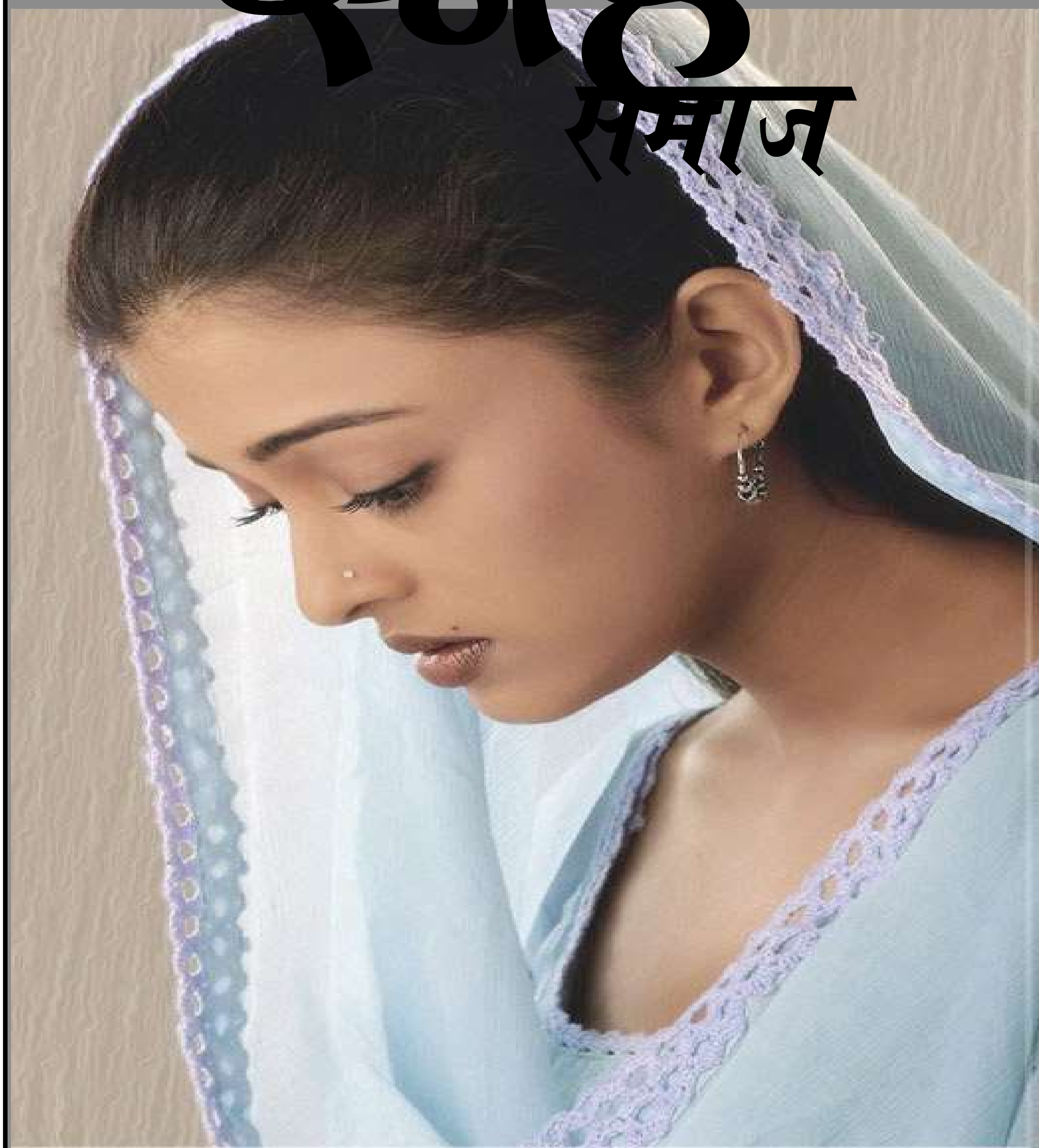

इलाहाबाद हाईकोर्ट एक नजर

RANCHI COLLEGE OF PHARMACY

(Approved by Pharmacy Council of India)

Prem Nagar, Hesag (Near Hatia Rly. Stn.) P.O. Hatia, Ranchi-3

Phone No:- (0651)2290644, 2290510, MO: 3338800

Few Seats are Vacant in Mgt. Quota

DIPLOMA IN PHARMACY

Course Duration: 2 Yrs, Elegibility : 10+2/ I.Sc. (MATH BIOLOGY)

SPECIAL FEATURE

- Premier Institute of Pharmacy in Bihar & Jharkhand
- Own Palatial- Building
- A library with stock of books
- Excellent Lab with Latest Equipments
- Excellent Facuity
- 24 hrs. Electricity facilities
- Salubrious environment for study

Application Form and Prospectus can be had on payement of Rs. 125/- by cash or Rs. 150/- by sending MO/DD/IPO in favour of **"RANCHI COLLEGE OF PHARMACY, RANCHI."**

Separate Hostel for Boys & Girls

DEKHO MOVIES

पुराने VCR/VCP/VCDके बदले में नया वेस्टन DVD

3 साल की वॉरण्टी के साथ

Weston DVD

3 YEAR WARRANTY*

Exchange Offer

Rs. 2,990/-**

Weston

*नियम एवं शर्ते लागू।

** रू0 390/– फ्रेंट एवं हेडलिंग अतिरिक्त।

Also plays: VCD/ACD/ MP3

अधिकृत वितरकः इलाहाबादः आजाद एजेन्सीज प्रतिनिधि रहित क्षेत्र की डिस्ट्रीब्यूटर/डीलर की जानकारी के लिए सम्पर्क करेंः अनिल श्रीवास्तव मो. : 9415111706

विश्व स्नेह समाज/

वर्ष : 4, अंक : 08 मई–जून 2005
विश्व
हिन्दी मासिक पत्रिका
स्नेह
समाज

प्रधान संपादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

कार्य. संपादकः
डॉ0 कुसुमलता मिश्रा

विज्ञापन प्रबंधक/प्रबंध संपादक
श्रीमती जया शुक्ला

उप संपादक
रजनीश कुमार तिवारी

सलाहकार संपादक
नवलाख अहमद सिद्दीकी

ब्युरो प्रमुख/ गिरिराजजी दूबे
छायाकार/ पतविन्दर सिंह

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायलीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा। संपादक, प्रकाशक, मुद्रक जी.के.द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई बाग से मुद्रित कराकर 277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ नैनी से प्रकाशित किया.

मूल्य एक प्रति : 3.00रुपये
वार्षिक मूल्य : 35.00 रुपये मात्र
विशिष्ट सदस्य :
100.00रुपये मात्र
पंचवर्षिय सदस्य :
160.00 रुपये मात्र
आजीवन सदस्यः 1100.00 रुपये मात्र
संरक्षकः 5000.00 रुपये मात्र

सम्पादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.-६३, नीमसराय,
मुण्डेरा, इलाहाबाद -२११०११
मो०: 9335155949

अपनी बात

भ्रष्टाचार शिष्टाचार का पर्यायवाची

हमारे देश में राजनेता व्यक्तिगत स्वार्थसिद्धि में भ्रष्टाचार को बढ़ावा देते हैं. जिसमें वे बड़े अधिकारियों को शामिल किये रहते हैं और अधिकारी अपने कनिष्क अधिकारी, कनिष्क अधिकारी अपने से कनिष्क, सबसे छोटे अधिकारी से बड़े बाबू, बड़े बाबू से बाबू व चपरासी तक यह क्रम अनवरत चलता रहता हैं. जब यह क्रम ऊपर से नीचे तक चलता है तो भ्रष्टाचार को रोके कौन. अन्तर सिर्फ इतना है कि कोई सौ प्रतिशत भ्रष्ट हैं तो कोई दस प्रतिशत. जब चुनाव आता है तो राजनीतिक दल चुनाव जीतने के लिए भ्रष्ट व्यापारियों से चन्दा लेते हैं और फिर उनका काम करते हैं तथा उन्हें मनमानी करने की छूट देते हैं. यह कमर तोड़ महगांई, काला बाजारी, रिश्वत खोरी आदि का जन्मदाता कोई और नहीं बल्कि हमारे राजनेता ही हैं.

सरकारी सेवाएं वस्तुतः जनता की सेवाएं हैं जनता की सेवा के लिए सरकार बनायी जाती हैं और सरकार के कार्य माध्यम यानी हाथ पांव कर्मचारी होते हैं. वे सेवा के नाम पर मेवा खाना चाहते हैं और मेवा तब मिलता हैं जब वे यह सिद्ध कर देते हैं कि वे सरकार की नौकरी में सेवा करने के लिए नहीं अपितु शासन करने के लिए आए हैं. इसके लिए वे सागर पर बैठ कर लहरे गिनने के नाम पर तब तक जहाज रोके रहने वाले कर्मचारी की भूमिका अदा करते हैं जब तक, जहाज स्वामी उनकी भेंट पूजा नहीं कर देता हैं. इसको चाहे सुविधा शुल्क या रिश्वत कहिए. सरकारी कर्मचारी बिना लिए काम करने का नाम नहीं लेता वह अमीर और गरीब दोनों को चूसता हैं और स्वयं ऐशो आराम की जीवन व्यतीत करता हैं. उसके केवल दो लय हो सकते हैं. अफसर के सामने गीदड़ और जनता के सामने भेंड़िया.

सरकारी सेवाओं के सन्दर्भ में भ्रष्टाचार शिष्टाचार का पर्यायवाची बन गया हैं. फाइलों पर सड़क, पुल, नाली का निर्माण हो जाता हैं, वे टूट भी जाते हैं और उसकी मरम्मत भी होती रहती हैं.

यदि संयोगवश कोई उत्साही इस दिशा में सफाई करने के लिए कुछ हिम्मत करके आगे बढ़ना चाहता हैं तो फर्श पर से टाट उठाते ही उसको सांप बिच्छुओं की बारात दिखाई देती है और वह डर कर वहीं टाट को उलट देता हैं. हमारे देश का भ्रष्टाचार निरोधी विभाग ही जब भ्रष्ट हो गया हैं तो इसको मिटाने की बात करना बेमानी होगी.

भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए जनता को स्वयं ही आगे आना होगा. यह राजनेताओं व अफसर साही के वश की बात नहीं. जब तक आम आदमी यह प्रण न कर ले कि हम चाहे कुछ भी हो जाए हम एक पैसे का सुविधाशुल्क नहीं देगें. तब तक शायद भ्रष्टाचार का बोलबाला खत्म या कम करने की बात करना बेमानी होगा. भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए एक युवा क्रांति की जरूरत होगी. बिना युवा क्रांति के भ्रष्टचार से देश को मुक्त नहीं कराया जा सकता हैं.

जी.के.द्विवेदी
(प्रधान संपादक)

आपके विचार स्नेह के साथ

रहे स्नेह पताका सघन तनी

हे भारत माँ के भाल बिन्दु
हे साहित्य गगन के विमल इन्दु
हे ज्ञान–धर्म अवगाह–सिन्धु
हे जग उपकारक दीन बन्धु
हो जीवन आपका सुखद अक्षय
हो नव वर्ष आप को मंगलमय।।
बजे भवन मंगल शहनाई
हो गुंजित यश, कीर्ति बधाई
दीर्घायु हो प्रतिभा –धनी
रहे स्नेह पताका सघन तनी
यह करें ईश से 'भानु' विनय
हो नव वर्ष आप को मंगलमय

भानु प्रताप सिंह 'क्षत्रिय'
चक पैगम्बरपुर, सिधॉव फतेहपुर, उ.प्र0

आप का दृष्टिकोण भी जानना चाहूंगा

आदरणीय द्विवेदीजी
सादर प्रणाम

स्नेह-सदभाव दे, प्यार दे हर्ष दें
सिद्धि, समृद्धि, उत्कर्ष दें
गोकुलेश्वर सुधी मेरी शुभकामना
दिल की चाहत है जो यह नया वर्ष दें.

आपकी सेवा में प्रकाशनार्थ दो ग़ज़ले भेज रहा हूँ. आशा है पसंद आयेगी एवं पत्रिका में स्थान देने का अनुग्रह करेंगें. दिव्य प्रभा के संदर्भ में आप का कृपा पत्र मिला. आप का पत्र धरोहर है. मैं उसका उपयोग दिव्य प्रभा के पुष्प–3 में करूंगा.

मैंने यर्थाथ गीता का उर्दू अनुवाद किया हैं जो देवनागिरी लिपि और उर्दू रस्मुख ख़त में प्रकाशित हैं. देवनागिरी संस्करण आपकी सेवा में भेज रहा हूँ. भावनात्मक एकता की दृष्टि से इसका महत्व होना चाहिए. पुस्तक पर महत्वपूर्ण लोगों के ढेर सारे पत्र प्राप्त हुए हैं. आप का दृष्टिकोण भी जानना चाहूंगा. आशा है स्वस्थ सानंद होगें. भवदीय

मुनीर बख़्श आलम,
संपादक दिव्य प्रभा, जे.149, नई कॉलोनी, चुर्क, सोनभद्र, उ.प्र.

जरूरत है पत्रिका को इसकी प्रसार संख्या में वृद्धि करने की

संपादक जी,
प्रणाम

विश्व स्नेह समाज को पहली बार सितम्बर 04 का अंक पढ़ा. कहानी 'अंधेरे में उजाला', खून के रिश्ते को कंलकित किया गुड़िया ने, विशेष रुप से पंसद आया. वहीं ज्योतिष कॉलम को भी बड़े चाव से पढ़ा. संपादकीय पढ़कर ज्ञान की बृद्धि हुई. किन्तु दुख की बात यह कि इसके बाद का अंक नहीं मिला. खैर पत्रिका बहुत पंसद आई. जरूरत है, इस पत्रिका को इसकी प्रसार संख्या में वृद्धि करने की, इस कारण इस पत्र के साथ एक लेख भी भेज रहा हूँ. अन्त में पत्रिका की शुभकामना सहित.

कुन्दन कुमार खवाड़ें
गोविन्द खवाड़े लेन, देवघर, झारखंड

फूर्सत व गहराई से किये सम्पादन के एक-एक पल को ढेरो बधाई

आदरणीय श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी, जयसिंह अलवारी का सप्रेम प्रणाम स्वीकारे जी

मंगलयमय रहके परमपिता–परमात्मा के प्रार्थना करता हूँ कि वो आप सबको सदा सुखमय व नित्य अपार वैभव में रखे जीं.

आगे आपका प्रेषित किया हुआ जनवरी का अंक प्राप्त हुआ जी. कोटिशः धन्यबाद मेरी रचना को सुन्दर स्वच्छ सकलन में स्थान देने का. हम आपके आभारों के सदा आभारी है जी. फूर्सत व गहराई से किये सम्पादन के एक–एक पल को ढेरों–ढेरो बधाई. पत्र के साथ अपनी चार रचनाएं संलग्न कर रहा हुँ. कृपया आगामी अंक में स्थान देके आभार प्रदान करे जीं.

आपका ही **जयसिंह अलवारी**
दिल्ली स्वीट, सिरुगुप्पा, बल्लारी, कर्नाटक,

पत्रकारिता पर यह एक सम्पूर्ण अंक हैं

परम श्रद्धेय महोदय,
सादर नमस्कार

विश्व स्नेह समाज का सिल्वर जुबली अंक पाकर सुखद आश्चर्य से भर उठा. आपको इस बात के लिए बहुत–बहुत बधाई कि आपने इस प्रकार की उपयोगी पत्रिका के संपादन का भार संभाला हैं. मुझसे भी जो रचनात्मक सहयोग हो सकेगा करूंगा. पत्रकारिता पर यह एक सम्पूर्ण अंक हैं.

नंदकिशोर शर्मा, श्रीरामपुर अयोध्या, पो. वैनी, जिला समस्तीपुर, बिहार

विश्व स्नेह समाज सर्वे भवन्तु सुखिनः के मूलमंत्र को प्रतिपादित करने की ओर अग्रसर हैं

आदरणीय बन्धुवर द्विवेदीजी,
सादर प्रणाम

पत्रिका प्रेषण हेतु धन्यबाद. आध्यात्म, ज्योतिष, साहित्य, स्वास्थ्य आदि विषयों को समेटे सम्पूर्ण मासिक पत्रिका विश्व स्नेह समाज सर्वे भवन्तु सुखिनः के मूलमंत्र को प्रतिपादित करने की ओर अग्रसर हैं. पथ पर निरन्तर अविचल कीर्तिमान स्थापित होते रहें और साथ ही विश्व कल्याण भी तभी आत्मिक आवाज विश्व स्नेह समाज की चर्चा करेगा. शुभकामनाओं सहित.

राजीव पाण्डेय, एस–1/188, कैलाश

नगर, वृन्दावन, मथुरा

वार्षिक व आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं

नमस्कार,
हम आपकी पत्रिका विश्व स्नेह समाज के वार्षिक व आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं. कृपया पत्रिका के वार्षिक व आजीवन सदस्यता शुल्क के विषय में बताने की कृपा करें ताकि हम आपकी पत्रिका के शीघ्र सदस्य बन सकें. कृपया शीघ्र भेजें.

विक्की नरुला, सुपुत्र श्री प्यारा सिंह नरुला, गॉव–खाखन, जिला–यमुनानगर, हरियाणा

आपके पत्र स्तंभ पत्रिका का दर्पण है

आदरणीय महोदय
विश्व स्नेह समाज पहली बार देखने में आई.संपादक मंडल को मेरी ओर से नववर्ष की शुभकामनाएं. यह पत्रिका दिन दूनी राज चौगुनी प्रगति करें. आपके पत्र स्तंभ बढ़िया हैं दर्पण हैं आपका प्रयास सराहनीय है. पाठकों की सहभागिता बढ़ायें उनकी समस्यायें, रचनायें आमंत्रित करें. नवोदित रचनाकारों को प्रोत्साहन दें. बेशक पत्रिका अपने जौहर दिखायेगी. पत्रिका का साफ सुथरा प्रकाशन सबको पंसद आयेगा.

रामचन्द्र राठौर, ग्राम–लालखेड़ी कुल्मी, पो. घुसी, जिला–शाजापुर, म.प्र.

आदरणीय सम्पादक जी, नमस्ते जी
निवेदन यह है कि कृपया विश्व स्नेह समाज की एक प्रति भिजवानें तथा वार्षिक शुल्क बताने की कृपा करें. अपने अन्य प्रकाशनों की सूची की एक प्रति भी भेजें. कष्ट के लिए क्षमाजी.

महेन्द्र सिंह शेखावत 'अकेला' 749, वार्ड न.16, शेखावत कुटीर, महावीर कॉलोनी, हिसार, हरियाणा

प्रिय सम्पादक जी, सादर अभिवादन
आपके द्वारा साहित्य श्री 04 हेतु मंगाए गये आवेदन के परिप्रेक्ष्य में मैं यह निर्धारित शुल्क भेज रहा हूॅ. आपके द्वारा अट्टाहस में प्रकाशित समाचार से मुझे इस संबंध में ज्ञात हो सका, परन्तु यह पत्रिका मुझे देर से मिली. अतः आपसे विनम्र अनुरोध है कि मेरी मजबूरी को दृष्टिगत रखते हुए मेरा आवेदन स्वीकार करने का कष्ट करेगें. इस मनीआर्डर के संग संग मैने आवदेन को स्पीड पोस्ट से भेज दिया हैं. कृपया इसे स्वीकार करने का कष्ट करें.

सत्यवान नायक, क्वां. सं. 1ए, सड़क–9, से.4, भिलाई, छत्तीसगढ़

आदरणीय द्विवेदी जी
साहित्य श्री सम्मान की सहयोग राशि भेज रहा हुॅ. मैं दस कवियों वाले काव्य संकलन में भी भागीदारी चाहता हूॅ. कृपया स्पष्ट करें कि सहयोगी रचनाकार को आप कितनी प्रतियां देगें? और इसका प्रकाशन कब तक होगा. लिखें.

सागर, रामपुरा, जालौन, उ.प्र.

महोदय,
आपका दिया विज्ञापन पत्रिका विश्व स्नेह समाज में मिला. मैं आपके ब्यूरों के नियमों के सम्बंध में जानकारी प्राप्त करना चाह रहा हूॅ. कृपया जवाबी पत्र द्वारा उचित जानकारी भेजने का कष्ट करें. अति कृपा होगी. धन्यबाद

भवदीय **अनूप कुमार**, द्वारा श्री बाबू लाल शर्मा, इन्द्रपुरी, मानसनगर, लखनउ,

श्री द्विवेदी जी,
सादर अभिवादन
बड़ी कृपा होगी यदि आप लौटती डाक द्वारा पत्रिका का वार्षिक शुल्क बतावेंगें. धन्यबाद.**आनन्द तिवारी पौराणिक**, श्रीराम टाकीज मार्ग, महासमुद्र, छत्तीगढ़

प्रिय महाशय,
आपका पता हमें सा. सीधी बात से प्राप्त हुआ. कृपया अपनी पत्रिका की एक प्रति अवलोकनार्थ प्रेषित करें. यदि संभव होगा तो उसकी समीक्षा हम अपनी त्रैमासिक पत्रिका 'बाल कुल्पना कुंज में प्रकाशित करेंगें. भवदीय,

रामसागर सदन,संपादक, बाल कल्पना कुंज, पो. बाघी ताजपुर, जिला–समस्तीपुर, बिहार

सेवा में संपादक जी,
चरण स्पर्श
आप हमारी राष्ट्रीय पत्रिका में किसी पाठक की उसके जीवन की भूली विसरी यादें, नोकझोक, पति–पत्नी के साथ, सुनहरे पल, किसी का पहला प्यार और एक कॉलम गृहणियों के लिए भी रखने का प्रयास करें. जिससे

सौरभ कुमार तिवारी, विनोद चौरसिया, लाल बाबू मद्धेशिया, दीनानाथ मद्धेशिया, बरहज, देवरिया

श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
आप द्वारा प्रेषित विश्व स्नेह समाज पत्रिका प्राप्त हो चुकी हैं. प्राप्ति की सूचना देने में विलम्ब अवश्य हुआ हैं. कारण मेरी व्यस्तता रही. पत्रिका पूरी पठनीय हैं. यह अंक सचमुच संग्रहणीय हैं. हमारी ओर से कृपया बधाई स्वीकारें. हम कभी इलाहाबाद आयेगें तो आपसे भेट करने के लिए प्रयास करेंगें. इन्हीं शब्दों के साथ.

मुरलीधर पाण्डेय, संपादक, सयोग साहित्य, 204 ⁄ ए, चिंतामणि अर्पाटमेंट, आर. एन.पी. पार्क, काशी विश्वनाथ नगर, भायंदर पूर्व, मुबई

आपकी प्रतिक्रियाएं हमारी अनमोल पूजी हैं. आप अपनी प्रतिक्रियाएं हमें निरन्तर भेजते रहें. हम आपके आभारी रहेंगें.

अलविदा-इल-एक्शन

भवानी शंकर 'तोसिक'

राजतंत्र में वचन की प्रधानता होती हैं. वचनों के कारण शासन को उदय और अस्त होते हुए देखा गया है. राजा दशरथ के दो वचनों ने राजतंत्र को ध्वस्त कर दिया. फिर गणतंत्र आया. गणतंत्र पहले भी था. आज भी हैं. मुखौटा बदल गया हैं. गणतंत्र में गण प्रधान होते हैं. गण शासन का वाचन करते हैं. वचन और वाचन का अन्तर निर्वाचन के द्वारा किया जाता हैं. निर्वाचन की विदेशी जुबान इलेक्शन कहलाती हैं. बाहुबलियों द्वारा अपनाये गये हथकण्डों से यहीं इलेक्शन इल-एक्शन में बदल जाता हैं.

आजकल अधिकांश जगह इल-एक्शन ही हो रहा हैं. यह एक उत्सव हैं जिसे बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता हैं. महीनों पहले से योजना बनती हैं. तैयारी होती हैं. मतदाता सूची से विरोधियों के नामों को करवाया जाता हैं. वर्षो पहले मरे हुए लोग मतदान दिवस पर जिन्दा होकर वोट डाल जाते हैं. फर्जी मतदान पहली च्वाइस हैं. अन्यत्र स्थान पर रोजी रोटी की तलाश में भटके हुए लोगों के नाम से वोट डालना परम धर्म माना जाता हैं. अनेक स्थानों पर बूथ कैप्चरिंग होती हैं. पुलिस और जनता के बीच मधुर लाठी भाटा जंग शुरू हो जाता हैं. प्रत्याशी द्वारा बॉटी गई शराब की बोतलें इधर-उधर दौड़ती दिखाई देती हैं. धरती पर बिछे लहूलुहान लोग पुलिस की हल्की लाठी चार्ज के शिकार हो जाते हैं. वर्षो से जंग लगे हथियार चमकने लगते हैं. सुनसान पड़ा सरकारी अस्पताल घायलों से आबाद हो उठता हैं. बैठे ठाले डाक्टरों को सेवा का अवसर मिलता है। बिचौलिये मालामाल हो जाते हैं. अनेक घरौंदें उजड़ जाते हैं. जिन्दा लाशें सरकारी राहत मिलते ही रिचार्ज हो जाती हैं. अब वे न तो भूखें सोते हैं और न ही किसी से उधार के लिए हाथ फैलाते हैं.

हारा हुआ उम्मीदवार मुँह लटका कर गम मिटाने निकल पड़ता हैं. जीता हुआ प्रत्याशी पकड़ा जाता है. बाड़ा बन्दी करके उसकी आरती उतारी जाती हैं. नीलामी होती है. बोली लगायी जाती हैं. उसे दर्शनीय बना दिया जाता है. लोग उसके दर्शनों के लिए तरस जाते हैं. धार्मिक एवं पर्यटन स्थलो पर उन्हें घुमाया जाता हैं. प्रत्येक जीतने वाला उम्मीदवार बाहुबली होता हैं. कोई उन्हें वोट दे या न दें इनकी जीत निश्चित होती है. जेल में पसरे हुए ये बाहुबली किसी की भी किस्मत को चमका सकते हैं. जो जीव पकड़ के बाहर होते हैं उन्हे परलोक तक की यात्रा स्वयं के खर्चे पर करवा देते हैं. गरीबों पर ये बहुत मेहरबान होते हैं. कम्बल, वस्त्र, नकदी, शराब, मादक पदार्थ और न जाने क्या क्या उपयोगी सामग्री मतदाताओं को घर बैठे पहुँचाकर पुण्य कमाते हैं. अपने जोड़ीदार को पछाड़ने के लिए कोई भी वार करने से ये नहीं चूकते. ये दूरदर्शी तो होते ही हैं अचूक निशानेबाज भी होते हैं. करवटें बदलने में इन्हें परहेज नहीं होता हैं. इसलिए हर शासन इन्हीं का होता हैं. यह इनका दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि समृद्ध परिवार में अवतार लेने पर भी ये अपने आपको गरीबिया कहलाना पसन्द करते हैं. अपने आपको किसान का बेटा कहते हैं. यही वह अवसर होता है जब ये लोग गंधे को भी अपना बाप कहकर गर्व का अनुभव करते हैं. गधे भी इस अवसर का पूरा लाभ उठाते हैं. कभी-कभी इन गधों और गरीबों के भाग्य को दुबारा चमकने का अवसर मिल जाता हैं. यह स्थिति मध्यावधि चुनाव कहलाती हैं. रेंगते हुए गधों और रींझते हुए गरीबों का मध्यावधि चुनावों में रुतबा बढ़ जाता हैं. यह बढ़ता हुआ रुतबा ही इल-एक्शन कहलाता हैं.

हे इल-एक्शन तेरी जय हो!

अलविदा, अलविदा इल-एक्शन

मो० हलीम अंसारी

जिला महामंत्री, भारतीय कांग्रेस पार्टी, इलाहाबाद

14 अप्रैल 1964 को जन्में हाजी मो0 यासीन के बड़े पुत्र हैं. चार भाईयों में सबसे बड़े मो. हलीम अंसारी की प्राथमिक शिक्षा सहसों में हुई. सी.ए.वी इंटर कॉलेज इलाहाबाद से इंटर के करने के बाद 1986 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय स्नातक की डिग्री हॉसिल की.

कहा जाता हैं होनहार वीरवान के होत है चिकने पात. बचपन से ही समाज सेवा से जुड़े रहें मो0 हलीम अंसारी लोगों के दुःख दर्द में हाथ बटाने के लिए समय का कभी नहीं ख्याल रखते. जब भी कोई दुखियारी उनके द्वारे आ जाता उसके साथ उसके दुख को दूर करने को निकल पड़ते. जनहित से पूर्ण रूपेण जूड़े रहें मो. हलीम अपने राजनीतिक कैरियर की शुरूआत अपने इंटर की पढ़ाई के दौरान सी.ए.वी. कॉलेज के चुनाव से किए. अपनी स्नातक शिक्षा के दौरान स्वयं तो चुनाव नहीं लड़े किंतु अपने सहयोगियों को चुनाव लड़ानें में भरपूर मदद की. स्नातक पूरा करने के बाद समाजवादी पार्टी में शामिल हो गयें. सपा में वे झूसी विधान सभा के अध्यक्ष तथा उत्तर प्रदेश कार्यकारिणी के सदस्य रहें. 1998 में अपने स्थानीय नेताओं से वैचारिक मतभेद व एक ही समुदाय के लोगों के कार्य होने के कारण सपा से त्याग पत्र दे दिया. 1998 में ही जब जनाब सलमान खुर्शीद पहली बार उत्तर प्रदेश काग्रेंस कमेटी के अध्यक्ष बने उसी कार्यकाल में काग्रेस पार्टी में शामिल हो गयें. उनके कांग्रेस में शामिल होने में झूसी टाउनएरिया के पूर्व चेयरमैंन रमेश चन्द्र अग्रवाल का महत्वपूर्ण योगदान था. 2002 में इलाहाबाद जिला के जिलाउपाध्यक्ष उसके बाद जिला महामंत्री चुने और 2002 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के झूसी विधानसभा से प्रत्याशी रहें और कांग्रेस के दुर्दिन के क्षणो में भी अपने बल बुते चौथी पोल किए. सबसे आश्चर्य जनक पहलू यह है कि उनके दूसरे नंबर के भाई देखने में बिल्कुल उनके जैसे ही हैं. बस थोड़ी हेयर स्टाइल में अंतर हैं. इसका फायदा मों. असारी ने भरपुर रूप से अपने विधानसभा चुनाव के दौरान उठाया. जिस क्षेत्र में स्वयं नहीं पहुंचे वहां अपने भाई को भेज दिया. जो उनके कम समय में भी अधिक क्षेत्र से जनसम्पर्क करने में सहायक सिद्ध हुआ.

इनके परिवार इनके पहले सक्रिय राजनीति में कोई नहीं था. केवल आम कार्यकर्ता के रूप में रहें.

उनका कहना है कि सपा छोड़ने के बाद कौन सी पार्टी में शामिल हुआ जाए इस बात को लेकर उहपोह की स्थिति थी. उनका कहना है कि टिकट के लिए लखनऊ से लेकर दिल्ली तक का लम्बा सफर कई चक्कर तय करना पड़ा. हमें टिकट दिलाने में अशोक बाजपेयी का महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं. आगे भी कांग्रेस के टिकट पर ही झूसी विधानसभा क्षेंत्र से लड़ने की तैयारी में अभी से लगे हुए हैं. उनका कहना है कि आने वाला समय कांग्रेस का होगा. उत्तर प्रदेश से लेकर केन्द्र में कांग्रेस की अपने बलबूते पर सरकार बनेगी. उनका कहना हैं–

कर सकें तो भला कीजिए
मत किसी का बुरा कीजिए
हर कोई हो सुखी हर जगह
सबके हित में दुआ कीजिए
धर्मो मजहब सभी एक से
सारे मजहब मिला दीजिए.

दिल की दुनिया तबाह मत करना
कुछ भी हो ये गुनाह मत करना
देवीचरन कश्यप 'अक्स'

इलाहाबाद हाईकोर्ट एक नजर

इलाहाबाद हाईकोर्ट की स्थापना १७ मार्च १८६६ को हाईकोर्ट की स्थापना का पत्र जारी हुआ. साथ ही १३ जून को गजट ऑफ इंडिया में इसका प्रकाशन हुआ और इलाहाबाद हाईकोर्ट अस्तित्व में आया.

भारत में हाईकोर्टो की स्थापना का इतिहास कोई बहुत ज्यादा पुराना नहीं है. पहले देशी रियासते फिर मुगल काल की रियासते के अपने कायदे कानून थे. लेकिन अग्रेंजो के आगमन उपरान्त कानून के माध्यम से न्याय देने की अलग व्यवस्था की गयी. इण्डियन हाईकोर्ट एक्ट १८६१ के माध्यम से पहले कोलकाता, मुबई और चेन्नई में हाईकोर्ट की स्थापना हुई और यहॉ की कार्यरत सुप्रीम व सदर अदालतों को खत्म कर दिया गया. इसी एक्ट के तहत उस क्षेत्र में जो उच्च न्यायालय के क्षेत्राधिकार में शामिल न हो, हाईकोर्ट स्थापित करने का प्रावधान भी किया गया. सन् १८६२ ई० में प्रेसीडेंसी में उच्च न्यायालयों की स्थापना की गयी. अभी पश्चिमोंत्तर प्रांतो में सदर दीवानी और निजामत अदालत ही कार्य कर रही थी.

नए हाईकोर्टें के अस्तित्व में आने से पहले सदर-दीवानी और निजामत अदालत किस तरह कार्य करती थीं, इसकी जांच कोलकाता हाईकोर्ट के न्यायाधीश कैपबेल ने की थीं. सन् १८६० के प्रारम्भ से १८६३ के अंत तक दीवानी मामलों की संख्या दुगुनी हो गई थी. २३ मार्च १८६२ को गर्वनर जनरल ने प्रस्ताव पारित करके कोलकाता हाईकोर्ट के एक न्यायाधीश को आगरा भेजने का निर्णय लिया. उनको सदर दीवानी अदालतें के कार्य को कोलकाता हाईकोर्ट से मेल-खाते कामकाज के परिवर्तन करना था. न्यायमूर्ति कैपबेल ने अपने रिर्पोट में कहा कि अदालत द्वारा न्यायिक एवं प्रशासनिक कार्य में अंतर न कर पाना, दुसरा अतार्किक तरीके से न्यायिक कार्यो का संचालन.

इलाहाबाद उच्च न्यायालय के पहले मुख्य न्यायाधीश सर वाल्टर मोरगन बनाए गएं अन्य न्यायाधीशों में विलियम राबर्ट्स, फ्रांसिस बॉयल, पियरसन और चार्ल्स आर्थर टर्नर हुए. चीफ जस्टिस मोरगन एवं न्यायमूर्ति टर्नर बैरिस्टर थे, जबकि अन्य बंगाल सिविल सर्विस के सदस्य व सदर अदालत के जज रह चुके थे. उच्च न्यायालय की स्थापना के समय न्यायमूर्ति एडवर्ड्स एवं न्यायमूर्ति रॉस अवकाश पर थे इसलिए सिविल सेवा के सदस्य जी०डी० टर्नबल एवं राबर्ट स्पैंकी को जज का कार्य देखने के लए नियुक्त किया गया. साइमन उच्च न्यायलय के पहले रजिस्टार थे.

इलाहाबाद में हाईकोर्ट के भवन के लिए क्वींस रोड स्थित स्थान को चुना गया और फिर इलाहाबाद उच्च न्यायालय स्थापित हुआ। आज जहॉ राजस्व परिषद है, पहले वहॉ उच्च न्यायालय हुआ करता था. नार्थ वेस्टर्न प्राविंसेस के पुराने गजेटियर के मुताबिक नया हाईकोर्ट १८७० में बनकर तैयार हुआ. माशूक अली खान व अन्य बनाम एनओडब्लूएल, डिसीजन सदर दीवानी अदालत, नार्थ वेस्टर्न प्राविंसेस इस हाईकोर्ट का पहला रिर्पोटेड केस था जिसका निस्तारण ३१ मई १८६६ को किया गया. १६ जूलाई १६४८ के उ०प्र० हाईकोर्ट अमलग्रेशन आर्डर १६४७ से लखनऊ में चीफ कोर्ट ऑफ अवध स्थापित थी. वर्तमान में इस हाईकोर्ट में कुल ४१ न्यायकक्ष है जबकि लखनऊ खंडपीठ में १७ न्यायमूर्ति कार्य कर रहे है।

हाईकोर्ट के अंग्रेज चीफ जस्टिसों के नाम व कार्यकाल

इलाहाबाद उच्च न्यायालय के १३५ वर्षो के इतिहास में कुल ३७ मुख्य न्यायाधीश हुए हैं। पहले मुख्य न्यायाधीश सर वाल्टर को छोड़कर कुल अंग्रेज मुख्य न्यायाधीश हुए हैं-

१. सर वाल्टर मोरगन १८६६-७१
२. सर राबर्ट स्टुअर्ट १८७१-८४
३. सर विलियम कॉमर पैथरम १८८४-८६
४. सन जॉन एज १८८६-६८
५. सर लुडस एडंकरशा १८६८
६. सर आर्थर स्टेची १८६८ - १६०१
७. सर जॉन स्टैनले १६०१- ११
८. सर हेनरी रिचर्ड १६११-१६
६. सर एडवर्ड ग्रीम वुड मीर १६१६-३२
१०.सर शाह मोहम्मद सुलेमान १६३२-३७
११.सर जान गिबथाम १६३७-४१

व्यंग्य

पतलूराम की पतलून

✍रामचरण यादव 'बैतुल'

पिछले पांच दिनों से पतलूराम की हेयर कटिंग सैलून दुकान बंद थी. पुराने ग्राहक दाड़ी कटिंग बनाने के चक्कर में फोकट ही परेशान हो रहे हैं, जबकि उन्हें भी पता है कि प्रति वर्षानुसार इस वर्ष भी पतलूराम अपनी पतलून सिलवाने दिल्ली या देहरादून गया होगा. मुझे भी विश्वास होने लगा था कि अब तो मई या जून सिर्फ दो महीनेही सेलून की दुकान खुलेगी क्योंकि देहरादून जाकर पतलू ने भीष्म की तरह भयानक प्रतिज्ञा जो कर लनी हैं. लोगों को भी यकीन होने लगा कि पतलून सिलवाकर ये अपलातून जरूर अपने ही अरमानों का खून करेगा. पता नहीं कब से उसके मन में भी प्यार पनप रहा था. प्यार का जुनून भी इसी पतलून की देना हैं. नई-नई पतलून पहनने का शौक तो पतलू को बचपन से ही हैं. पहले तो पतंग उड़ानो का रहा, फिर उससे तंग होकर जंग लड़ने का शौक पाला किन्तु अब तो पत्नी पालने का विचार बना लिया हैं. गंदी बस्ती की बदनसीब बानों की तलाकशुदा बदनाम बेटी पारों से पतलूराम दिल लगा बैठे हैं. हालांकि प्यार का कोई तर्जुबा पतलू के पास नहीं हैं फिर भी ऐसा साहस करके सचमुच उसने बहुत बड़ा खतरा मोल ले लिया हैं. इधर सात समंदर पार रहने वाली पारों चांद तारों से भी आगे जानाचाहती हैं उधर पतलू उसे पाना चाहता हैं. अब देखना ये हैं कि दोंनों की चाहत क्या रंग लाती हैं.

बेचारे पड़ोसी प्यारेलाल के अथक प्रयासों के बावजूद भी पतलूराम की पाचन क्रिया में कोई वृद्धि नहीं हुई बल्कि कमर और अधिक पतली तथा स्वास्थ्य में खराबी उत्पन्न हो गई. पतलू के पूर्व परिचित साथियों ने गांव के पटेल, मंदिर के पुजारी, कस्बे के पटवारी तथा एक सरकारी कर्मचारी व अधिकारी की सहायता से किसी तरह पतलू के प्यार को परवान चढ़ाया अर्थात विवाह सम्पन्न करवाया. पटेल, पटवारी पुजारी और अधिकारी की मिलीभगत से पारो भी काफी प्रसन्न थी परन्तु पतलुराम थोड़े बेचैन थें. बेचैनी का कारण उनकी पुरानी पतलून ही थी. शादी विवाह या विशेष पर्वो पर प्रायः पतलू नई पतलून ही पहनता हैं. आज स्वयं की शादी में तथा जल्दबाजी वह नई पतलून पहनने से वंचित जो रह गया. शादी के बाद की कथा तो और अधिक विचित्र हैं. सभी को पता है कि शादी के प्रथम दिवस पर सुहागरात की सेज सजायी जाती हैं. पर पतलू के पास तो एक टूटा पलंग भी नहीं था. जीवन भर की कमाई शादी में लगाई अब जो खरीदी थी चटाई बेचारे ने वहीं बिछाई. जब पारों को पता चला कि इसके पास तो पलंग तक नहीं तो बहुत पछताई. पतलू के प्यार में पागल पारों ने अपने ही हाथों अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मारी थी. खैर कोई बात नहीं सुहागरात तो किसी तरह बात-बात में ही गुजार दी. सुबह सवेरे प्रतिदिन की भांति पतलूराम ने फलाहार का प्रोग्राम बनाया तो ध

इलाहाबाद हाईकोर्ट के भारतीय चीफ जस्टिसो के नाम व कार्यकाल

1. सर इकबाल अहमद 1941—46
2. मा0 कमला कांत वर्मा 1946—47
3. सर विधु भूषण मलिक 1947—55
4. सर ओबेहावेल मूथम 1955—61
5. मा0 मनुलाल चुनीलाल देसाई 1961—66
6. मा0 वशिष्ठ भार्गव 1966
7. मा0 नसीरउल्ला बेग 1966—67
8. मा0 विद्याधर गोविनगोक 1967—71
9. मा0 शशिकांत वर्मा 1971—73
10. मा0 धात्री सरन माथुर 1973—74
11. मा0 कुंवर बहादुर अस्थाना 1974—77
12. मा0 डी0एम0 चंद्रशेखर 1977—78
13. मा0 सतीशचंद्र 1978—83
14. मा0 एम. एन. शुक्ला 1983—85
15. मा0 एच. एन. सेठ 1986
16. मा0 के. जे. शेटठी 1986—87
17. मा0 द्वारका नाथ झा 1987
18. मा0अमिताव बनर्जी 1987—88
19. मा0 ब्रहमनाथ काटजू 1988—89
20. मा0 बी. पी. जे. रेड्डी 1990—91
21. मा0 एम. के. मुखर्जी 1991—92
22. मा0 एस.एस. सोढ़ी 1994—95
23. मा0 ए. एल. राव 1995—96
24. मा0 डी0पी0 महापात्रा 1996798
25. मा0 एन. के. मित्रा 1999—2000

इलाहाबाद हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश से सम्बन्धित कुछ मुख्य तथ्य

1. न्यायमूर्ति द्वारका नाथ झा हाईकोर्ट इलाहाबाद के मात्र एक दिन मुख्य न्यायाधीश रहें क्योंकि अगले ही दिन उन्होंने अवकाश प्राप्त किया।
2. न्यायमूर्ति शाह मोहम्मद सुलेमान इलाहाबाद हाईकोर्ट के पहले भारतीय मुख्य न्यायाधीश थे, जो 1932 से 1937 तक मुख्य न्यायधीश रहें
3. न्यायमूर्ति कमला कांत वर्मा एवं उनके पुत्र मा0 शशिकांत वर्मा दोनों ही मुख्य न्यायाधीश बनें।

अगले अंक में

0 युवा उदीयमान व ऊर्जावान विधायक, ई0 उदयभान करवरिया की जीवन चर्या

० मधुशाला की मधुबाला-राजेश कुमार सिंह ० उभरती बाल्य गायिकाः मोनिका जायसवाल ० देवरिया महोत्सव एक रिर्पोट ० साहित्य मेला २००५ ० कैसा रहेगा शनि साढ़े साती के दौर में ० दो कहॅानिया, तीन लघु कथाएं व अन्य स्थायी स्तम्भ

ऐसा कोई कार्य बाकी नहीं, जिससे किसी की आवश्यकता पड़ें : पं. दुर्गा मिश्रा

प्रदेश के विज्ञान, प्रोद्योगिकी एवं सैनिक पुनर्वास कल्याण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) एवं विधायक, बरहज विधानसभा, देवरिया पं. दुर्गा प्रसाद मिश्र से हमारे संवाददाता सौरभ तिवारी ने भेंट की. प्रस्तुत हैं भेंट वार्ता का मुख्य अंशः

सं. आज प्रदेश में बिजली सड़क, बेरोजगारी की समस्या हैं. इस पर आपकी सरकार क्या कदम उठा रही हैं?

मंत्रीः सरकार अपने सीमित साधनों से अधिकतम सुविधा जन सामान्य को दे रही हैं. विकास बड़ी तेजी के साथ अग्रसर हो रहा हैं. विगत सरकार से वर्तमान सरकार को हुमायुं का रिक्त राजकोष मिला था और हमारी सरकार शाहजहां के स्वर्ण युग की तरफ जा रही हैं.

सं. मंत्री के रुप में आपने कौन सा ऐसा कार्य किया हैं जिससे आपके न रहने पर जनता याद करें?

मंत्रीः जब तक यह संसार हैं तब तक लोग मुझे याद करेगें क्योंकि मैंने बरहज में पीपे का पुल दिया, देववारी डुमरिया को 45 लाख का पुल दिया, मेहीहवा का अस्तीत्व हमनें बचा लिया, परसिया चन्दार में (भागलपुर ब्लाक) में 1 करोड़ 42 लाख की लागत से 30 शईया का चिकित्सालय दिया. बरहज चौराहे पर दुधिया प्रकाश की व्यवस्था की. ऐसा कोई गांव नहीं जो सम्पर्क मार्ग से अछुता नहीं हैं. स्कूल पर्याप्त मात्रा में मौजूद हैं. ऐसा कोई कार्य बाकी नहीं रह गया जिससे किसी की आवश्यकता पड़ें.

सं. झारखण्ड व गोवा के राज्यपालों के बारे में आप क्या कहन चाहते हैं?

मंत्रीःझारखण्ड के राज्यपाल बधिक हैं. मर्यादा का घोर उल्लघन किया हैं. गोवा में प्रतिक्रियात्मक हुआ है. नंगा नाच हुआ हैं. महाभारत में द्रोपदी की लाज सत्ता में बैठे लोगों द्वारा लूटी गई थी. ठीक उसी प्रकार झारखण्ड में सत्ता के लोगों द्वारा संविधान की होली जलाकर लोकतंत्र की द्रोपदी की लाज लूटी गई हैं.

सं. आपके सामने ऐसी कौन सी समस्या हैं जो आपको तीन बार इस्तीफा देने पर मजबूर किया?

मंत्रीः यह मेरा व्यक्गित मामला हैं. मेरे पास सवैंधानिक अधिकार हैं कि जब चाहे मैं इस्तीफा दे सकता हूँ. आपसी तालमेल का अभाव हैं.

सं. क्या आप बुलावा आने पर भाजपा में जाएगें?

मंत्रीःमैंने भाजपा नहीं छोड़ी. मुझे निकाला गया था.

ीरे-धीरे पारों का पारा भी उतरता चला गया.

रात गई बात गई. प्रातःकाल से ही पारों अत्यधिक प्रफुल्लित दिखाई दे रही थी. उधर पतलूराम की पतलून भी सिल के आ गई थी. इसलिए वह भी पतलून पाकर प्रसन्न था. यह शत प्रतिशत सही है कि सर्वाधिक प्यार तो वह अपनी पतलून से ही करता हैं और सच पूछो तो आज भी वह अपने पहले प्यार को भुला नहीं पा रहा हैं. पारों के पहले पतलून क्योंकि पहली दफा जब प्यार पैदा हुआ तो वह पतलून से ही हुआ था. पतलून की प्रेरणा से सेलून की दुकान संभाली थी. वैसे पतलू शक्ल से काफी समझदार दिखाई देता है मगर अक्ल के मामले में बिल्कुल कमजोर. इसी कमजोरी का फायदा उठाते हुए पारों ने अपने ईशारों पर उसे नचाना शुरू कर दिया. परसों ही पारो ने पड़ोसन से फुर्सत में बात की तो उससे ज्ञात हुआ कि पतलू तो पहले से ही पड़ोसन पर फिदा हैं. पारों भी हजारों में एक थी उसने भी सारे अखबारों में एक विज्ञापन दिलवा दिया कि पत्नी को पालने में पतलूराम पूरी तरह असफल रहा है अतएव उसकी शादीशुदा पत्नी पारों के लिए एक अच्छा सा फालतू और पालतू किस्म का पुराना पति चाहिए जो घिसा पिटा हो साथ ही ठीक तरह पारों को पाल सकें, संभाल सकें. ऐसे योग्य उम्मीदवार शीघ्र सम्पर्क करें, स्थान है पतलू की दुकान. खबर पढ़कर पतलू की दुकान के आगे सैकड़ो की संख्या में भीड़ लग गई. एक से बढ़कर एक ख्याति प्राप्त उम्मीदवार लाईन में लगकर पारों को पाने के लिए तैयार थें. पतलू तो पहले ही पतलून से पीड़ित था ऊपर से इन जमा पुरूषों की पारदर्शी बुद्धि से भी काफी प्रभावित हुआ. नदी-पहाड़ पार करने के पश्चात् भी कुछ पुराने पापी पैदल चलकर आगे-पीछे ही सही पर पहुंच चुके थे. पतलूराम प्रभु से प्रार्थना करने लगा हे भगवान मुझे ि फर कभी किसी भी जन्म में प्यार व पारों के चक्कर में मत डालना वरना आप स्वयं भी पूजा पाठ, आरती-प्रसाद सें वंचित हो जाओगें. हर एक समस्या का निदान है, प्रत्येक प्रश्न का कोई न कोई हल अवश्य होता हैपर पतलूराम की पतलून का आज तक भी कोई हल न मिल सका आखिर सारे प्रयत्न बेकार रहे क्योंकि पतलू पारों को छोड़ सकता है पर पतलून नहीं. परिणाम चाहे जो कुछ हो पतलूराम ने हिम्मत करके पारों के प्यार की परीक्षा पास कर ही ली और पुनः एक नई पतलून खरीद ली. माना कि पतलून और पतलू के बीच फंसकर पारों भी बहुत परेशान है इतना सब कुछ होने के बाद भी पुराने यारों के साथ पारों का पतलू पर भी पूरा-पूरा ध्यान हैं. भगवान करें दोनों पति-पत्नी में आपसी प्रेम और अधिक बढ़े भले ही पतलून फटे तो फटे कोई हर्ज नहीं. पाठकों को शायद पता नहीं है कि मुझे भी फोकट में किसी की प्रशंसा करना पसंद नहीं है फिर भी पतलून के प्रति कुछ पंक्तियां प्रस्तुत की हैं. उम्मीद है आपको जरूर प्रिय लगेगी. इसी विश्वास के साथ आपके पत्र की प्रतिक्षामें आपका अपना प्यारा फरिश्ता पलटू पठान.

भगत सिंह ने क्रांतिकारी आन्दोलन को जनता का आन्दोलन बनाया

0रामविलास प्रजापति

भगत सिह जब लाहौर के नेशनल कॉलेज में पढ़ रहे थे उसी समय उन्होंने फ्रांस के अराकतावादी श्री बेलां का फ्रांस की असेम्बली में बम फेंकने के बाद दिया बयान पढ़ा था और भारत की केन्द्रीय असेम्बली में बम फेंकने की बात इनके मन में पक्की हो गयी थी. वे गुप्त आन्दोलन को जनता का आन्दोलन बनाना चाहते थें. इसीलिए उनका कहना था कि बम फेंकने के बाद भागना ठीक नहीं. वहीं गिरफ्तार होकर मुकदमें को, दल के विचारों के प्रचार का माध्यम बनाया जाये, जो खबरें बनकर पत्रों में छपकर जनता तक पहुँच सकती हैं.

इधर आगरा में बने बम असेम्बली तक पहुंचने के लिए बेताब थें. 'क्रांतिकारी भी चाहते थे कि कुछ ऐसा काम करना चाहिए जो अदभुत हो. क्रान्तिकारी काकोरी काण्ड के अभियुक्तों को छुड़ाने में असफल हो चुके थे. साइमन कमीशन पर बम न फेंकने की खिन्नता थी किन्तु साण्डर्स बध की सफलता ने उबाल उठा दिया था. समय भी बेहतर आ गया था. उसी समय केन्द्रीय असेम्बली में दो बिल पेश होने थे. एक पब्लिक सेफ्टी बिल जन सुरक्षा बिल और दूसरा ट्रेड डिस्प्यूट्स बिल (औद्योगिक विवाद बिल) ये दोनों बिल युवक आन्दोलन को कुचलने और मजदूरों से हड़ताल के अधिकार को छीनने के लिए लाये गये थे. भगत सिंह की सोच थी कि ये दोनों बिल असेम्बली में पास नहीं हो पायेगें और वायसराय इसे प्रतिष्ठा का विषय बनाकर अपने विशेषाधिकार (वीटो) का इस्तेमाल कर पास कर देगें. भगत सिंह अपने क्रांतिकारी साथियों की मीटिंग में यह प्रस्ताव रखा कि जब वायसराय की इन बिलों को पास होने की घोषणा हो उसी समय बम फेंका जाए और अपने उद्देश्यों को स्पष्ट करने वाले पर्चे भी फेके जाय. बम कोन फेंके इस पर मतभेद था. भगत सिंह स्वयं असेम्बली में बम फेंकना चाहते थे किन्तु उनके अन्य साथी दल की उन्नति और संगठन के लिए -'आजाद' और भगत सिंह का जिन्दा रहना आवश्यक समझते थे. इसलिए को भगत सिंह की आहुति दने को तैयार नहीं थे.

क्रातिकारी दल की बैठक में काफी जद्दो-जहद के बाद यह तय हो गया था कि जो असेम्बली में बम फेंकने जायेगा वह वहॉ से भागेगा नहीं बल्कि अपनी गिरफ्तारी देगा. बात यह थी कि जो बम फेंकने के बाद गिरफ्तार होगा उसे फॉसी ही होगी. हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ की केन्द्रीय समिति की बैठक में जिद्द करके भगत सिंह ने अपना और बटुकेश्वरदत्त का नाम तय कर लिया था. इधर दिल्ली में जयदेव कपूर उसका ताना बाना बून रहे थें. उन्होंने असेम्बली के सदस्यों से ऐसा विश्वसनीय सम्पर्क जोड़ लिया था कि वे जब चाहे असेम्बली में जाने के लिए पास मिल जाये. इन पासों से भगत सिंह, आजाद और दूसरे कई साथी भी असेम्बली में हो आये थे, सब परिस्थितियां और स्थान देख आये थें कि कहॉ से बम फेंका जाय और कहॉ जाकर गिरे. नक्शा अब पूरी तरह तैयार था.

असेम्बली ने दोनों बिलों को फेल कर दिया था और वायसराय ने उन दोनों को अपने विशेषाधिकार से पास कर दिया. आठ अप्रैल १६२६ को वायसराय की घोषणा असेम्बली में बुलायी जाने वाली थी. निर्णय हो गया कि उसी दिन और उसी समय बम फेंका जाय. अब भगत सिंह और वटुकेश्वर दत्त को छोड़ सभी साथियों को दिल्ली से बाहर चले जाने का निर्देश दिया गया. आजाद घोसी चले गये. भगत सिंह और वटुकेश्वर दत्त ने दिल्ली में ही अपना फोटों खिंचवाया. ये चित्र संगठन के साथियों को भी दे दिया गया ताकि बम काण्ड के बाद ये चित्र समाचार पत्रों में छप सकें.

आठ अप्रैल १६२६ का दिन था. जयदेव कपूर भगत सिंह और वटुकेश्वर दत्त को असेम्बली मे ले जाकर उस स्थान पर बैठा दिये जहॉ से बिना किसी सदस्य को नुकसान पहुँचाये बम फेंका जा सकता था. भगत सिंह और वटुकेश्वर दत्त खाली कमीज और निकर पहने हुए थे. ज्योंहि वायसराय द्वारा विशेषाधिकार से बिलों को पास करने की घोषणा हुई. भगत सिंह ने अखबार में लिपटा हुआ बम अपने हाथ में लिया और सरकारी बेंच वाली खाली जगह पर लकड़ी की दीवार के पास फेंक दिया. बम का ध माका इतना तेज हुआ कि कानों के पर्दे हिल गये और दिल की धड़कने बढ़ गई. लोग संभल भी नहीं पाये थे किभगत सिंह ने दूसरा बम फेंक दिया. उसके ध माके में लोगों के रहे सहे होश गुम कर दिया. तभी उन्होंने छत के ऊपर हाथ उठाकर पिस्तौल की दो गोंलिया दांगी. साइमन साहब भी वायसराय की गैलरी में बैठे असेम्बली देख रहे थे. सबसे पहले वे भागें. कुछ सदस्य भागकर बाहर आ गये, कुछ गैलरी में चले गये और कुछ बाथरूम में छिप गये. पूरा हाउस नीले धुंए से भरा था जब साफ हुआ तो हाउस खाली था. सदस्यों में पं. मोतीलाल नेहरु, मुहम्मद अली जिन्ना और मदन मोहन मालवीय अपनी जगह पर ज्यों के त्यों बैठे थे. दर्शक गैलरी में केवल वीर भगत सिंह और वटुकेश्वर

दत्त खड़े थे. उन्होंने पूरे जोर से नारा लगाया "इन्कलाब जिन्दाबाद" दूसरा नारा गूंजा "साम्राज्यवाद का नाश हो." उसी समय कुछ पर्चे वटुकेश्वर दत्त ने हाउस में फेंकें -उसमें लिखा था "हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र सेना."

बुहारों को सुनाने के लिए ऊँची आवाज की जरूरत होती हैं. हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि कुछ लोग साइमन कमीशन के द्वारा सुधारों के नाम पर जूठे टुकड़ें पाने की आस लगाये बैठे हैं और मिलने वाली लाजी हड्डियों के बॅटवारें के लिए झगड़ा तक कर रहे हैं. इसी समय सरकार भी भारतीय जनता पर दमनकारी कानून लादती जा रही हैं जैसे पब्लिक सेफ्टी बिल ओर ट्रेड डिस्प्यूटस बिल. इसी के साथ उसने प्रेस डिसीजन बिल को असेम्बली के अगले अधिवेशन के लिए रख लिया हैं. मजदूर नेताओं की गिरफ्तारी तेजी से हो रही हैं.

इस बेहद उत्तेजक परिस्थितियों में हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ ने पूर्ण गम्भीरता के साथ अपना उत्तरदायित्व निभाते हुए अपनी सेना को यह कार्य करने का आदेश दिया हैं. जिससे कानून का यह अपमानजनक मजाक बन्द हों. विदेशी सरकार की शोषक नौकरशाही जो चाहे करें लेकिन उसका नग्न रूप तो जनता के समक्ष लाना आवश्यक हैं. जनता के चुने हुए प्रतिनिधि अपने क्षेत्रों में लौट जाय और आने वाली क्रांति के लिए जनता को तैयार करें. व्यक्तियों की हत्या करना आसान हैं. किन्तु तुम विचारों की हत्या नही कर सकते. बड़े -बडेत्र साम्राज्य नष्ट हो गये जबकि विचार जीवित हैं. फ्रांस के ब्रूवॉ और रूस के जार समाप्त हो गऐ जबकि क्रांतिकारी सफलता के साथ आगे बढ़ गयें. हम मानव जीवन को पवित्र समझते हैं, हम ऐसे उज्जवल भविष्य में विश्वास करते हैं जिससे प्रत्येक व्यक्ति पूर्ण शान्ति और स्वतंत्रता का उपभोग करेगा. हम मानव रक्त बहाने के अपनी विवशता पर दुखी हैं परन्तु क्रांति द्वारा सबको समान स्वतंत्रता देने और मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण को समाप्त कर देने के लिए क्रांति से कुछ व्यक्तियों का बलिदान आवश्यक हैं. इन्कलाव जिन्दाबाद.

उपरोक्त बातें उस पर्चे में छपी थीं जो उस समय असेम्बली में फेके गये. उसी समय असेम्बली में सारर्जेन्ट टेरी और इन्सपेक्टर मिस्टर जानसन आये. वे दोनों घबराहट में थें. भगत सिंह ने गोलिया भरी अपनी पिस्तौल मेज पर रख दी. अग्रेजी सरकार के करिन्दे पर्चे बटोर लिए क्योंकि वे पर्चे राष्ट्रीय कार्यक्रम का रूप दे रहे थें. दिल्ली के अंग्रजी दैनिक 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के संवाददाता ने होशियारी और फुर्ती से एक पर्चा उड़ा लिया जो शाम के संस्करण में छप गया. सरकार ने असेम्बली बम काण्ड की खबर बाहर भेजने पर रोक लगा दी किन्तु यह खबर कलकत्ता से भी कई अखबारों में छपी.

भगत सिंह और वटुकेश्वर दत्त गिरफ्तार कर लिए गए. कोतवाली में जब पुलिस ने दोनों लोगों से अपना बयान देने को कहा तो जवाब मिला कि मुझे पुलिस के सामने कोई बयान नहीं देना हैं. जो भी कहना है हम अदालत के सामने ही कहेंगें. पुलिस ने उन्हें दिल्ली के जेल भेज दिया. एक अदालत के समक्ष भगत सिंह लाहौर जेल में थे तभी सात अक्टूबर १९३० को ट्रिव्यूनल का एक विशेष सन्देश वाहक जेल में आया और उसने अभियुक्तों को ट्रिव्यूनल का फैसला सुनाया जिसमें भगत सिहं, सुखदेव राजगुरू को फॉसी की सजा हुई थी. अन्त में २३ मार्च १९३१ को तीनों वीर नौजवानों ने लाहौर जेल में फॉसी हो गयी. भारत माता के इन वीर सपूतों ने हॅसते हुए फॉसी का फन्दा अपने गले में डाला था. भगत सिंह मरकर भी अमर हैं, उनके विचार जीवित हैं.

पत्रकार दैनिक जागरण, बरहज, देवरिया

प्रोत्साहन के स्मृति अंक का लोकार्पण

प्रोत्साहन के स्मृति अंक ६४, का लोकार्पण व विमोचान कार्यक्रम हार्दिक सदभावनाओं के साथ सम्पन्न हुआ. इस अंक का विमोचन किया आकाशवाणी मुम्बई केन्द्र के सिन्धी विभाग के कार्यक्रम निष्पादक श्री हरेश मीर चन्दानी नें. उन्होंने कहा कि प्रोत्साहन एक साहित्यिक स्तरीय पत्रिका हैं. इसमें प्रकाशित सामग्री पठनीय एवं सुरूचि पूर्ण होती हैं. प्रोत्साहन को सभी प्रकार का प्रोत्साहन मिलना ही चाहिए.

इस अंक की प्रथम प्रति श्री रमेश जैन को दी गयी. श्री रमेश जैन एक अच्छे कवि हैं. उन्होंने प्रोत्साहन द्वारा की गयी सेवा तथा सेतपाल जी की कर्मठता की भूरि-भूरि प्रशंसा की. आगन्तुकों ने भी शुभकामनाएं प्रकट की और अन्त में प्रोफेसर सेतपाल ने आभार प्रदर्शित किया.

अखिल भारतीय पत्र-पत्रिका प्रदर्शनी हेतु

पत्रिकाएं/पुस्तकें सादर आमंत्रित हैं

संयोजक

तारिका विचार मंच प्रयाग, गॅधियांव, करछना, इलाहाबाद

एक और रागिनी

डॉ० प्रणीता प्रणव
डॉ. प्रणीता प्रणव

उस दिन आन्टी अत्यन्त प्रसन्न थी. क्योंकि बड़े प्रयत्न के बाद रागिनी का रिश्ता एक समृद्ध परिवार से पक्का हो गया था. कुछ दिनों के पश्चात् ॲगूठी की रस्म भी हो गयी, जिसमें रागिनी के ससुराल पक्ष द्वारा लाये गये आभूषण साड़ी आदि वस्तुओं को देखकर रागिनी के परिवारी जन फूले नहीं समा रहे थें. हॉ रागिनी के भावी पति के श्याम वर्ण के कारण रागिनी का परिवार कुछ असन्तुष्ट था, लेकिन उन्होंने ये कहकर सन्तोष कर लिया कि गोर और काले दो रंग ही तो होते हैं, व्यक्ति में गुण होने चाहिए तो लड़का डाक्टर है हीं.

सगाई के पश्चात रागिनी की सासू मॉ का आये दिन फोन आता रहता कि"बेटी रागिनी तुम्हें कौन से रंग पंसद हैं? कैसी साड़ी पसन्द करती हो? आभूषणों की डिजाइन पसन्द करने यहीं आ जाओं." ये बातें सुनकर रागिनी के माता पिता गदगद हो जाते कि " इसकी सास कितनी अच्छी हैं. हमारी बेटी उस घर में बहुत सुखी रहेगी. आजकल ऐसे परिवार कहॉ मिलते हैं. आये दिन सासें बहुओं पर अत्याचार करती देखी जा रही हैं. हमारी रागिनी बड़ी सौभाग्यशाली है जो ऐसे ससुराल वाले मिले हैं."

दो–तीन माह के उपरान्त वह शुभ घड़ी भी आ गयी, जब रागिनी और रोहन को परिणय सूत्र बन्धन में आबद्ध होना था. हम लोग भी विवाह स्थल पर पहुॅचे और बारात–आगमन की प्रतीक्षा करने लगें.

रागिनी को ईश्वर इतनी तन्मयता से रचा था कि उसके दर्शन से ऐसा प्रतीत होता था कि कहीं वह स्पर्श मात्र से मलिन न हो जाये. उसे जो भी देखता वह निर्निमेष नेत्रों से देखता ही रह जाता. लोगों का तो ये कहना था कि रागिनी जिस घर में जायेगी, उस

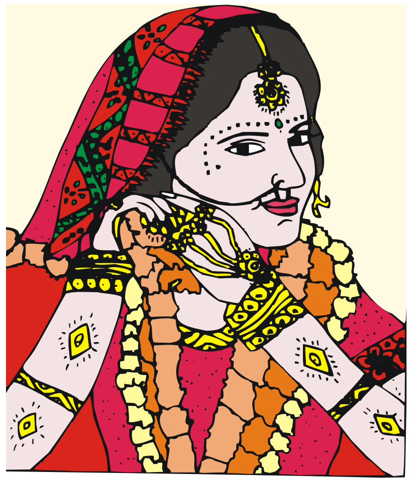

घर को अपने सौन्दर्य रूपी ज्योति से जगमग कर देगी. सौन्दर्य के साथ–साथ वह अध्यनशीला तथा कर्मठ भी थी. उसके गुणों ने रागिनी के सौन्दर्य में चार चॉद लगा दिये थें. अतः वर को देखने की आकुलता के कारण प्रतीक्षा का एक–एक पल बड़ी बड़ी मुश्किल से व्यतीत हो रहा था. अचानक बैण्ड की ध्वनि सुनाई पड़ी तो हमारे कान खड़े हुए और हम लोग बारात देखने के लिए जनवासे के द्वार पर आ गए. हमारे नेत्र रोहन को देखने के लिए लालायित थे. हमारी दृष्टि जैसे ही वर पर पड़ी हमारी पैरो तले जमीन खिसक गयी. रोहन का रूप विवाह में सम्मिलित कन्या पक्ष के लोगों के मध्य चर्चा का विषय बन गया था. कोई कह रहा था कि 'रागिनी के घर वालों को ये ही कुॅवर विवाह हेतु मिलें' क्या देखकर शादी तय कर दी. सर्वप्रथम द्वार पर लड़के को ही देखा जाता हैं. कोई कहे कौआ लोई ले गया. 'रागिनी के ससुराल वाले धन्य हो गये, जो ऐसी योग्य लड़की मिल गयी. रागिनी ने कैसे पसन्द कर लिया ऐसे कुरूप लड़के को आदि–आदि. खैर! इसी बीच जयमाल आदि की रस्म हुई और हम लोगों ने भोजन के उपरान्त उपयुक्त जोड़ी न होने के कारण असन्तुष्ट हो अपने–अपने घर की ओर प्रस्थान किया. अगले दिन रागिनी विदा हो गयी.

रागिनी जब ससुराल से आयी तो अत्यन्त प्रसन्न थी. पुत्री को प्रसन्न देखकर माता–पिता को भी सन्तुष्टि हो गयी कि चलो रोहन व उसके परिवार वलों के प्रति हमारा जो दृष्टिकोण था वह उचित ही था. आन्टी रागिनी के सुसराल वालों की प्रशंसा करते नहीं थकती थी. रागिनी का मायके में एक या दो माह रहना तो अक्सर होता था. आस–पड़ोस वाले रागिनी के इतने दिनों तक पितृ–गृह में रहने पर टीका–टिप्पणी करते.

दो वर्ष उपरान्त एक दिन मम्मी रागिनी के यहॉ से बहुत विलम्ब से लौटी तो हमने पूछा कि ऐसी कौन सी महत्वपूर्ण बातें थी जो आप इतने विलम्ब से आ रही हैं. तब मम्मी ने बताया कि 'आन्टी की व्यथा सुनकर आ रही हूॅ. सारी बात सुनकर हम लोग अवाक् रह गये. वास्तविकता यह थी कि रोहन बचपन से ही पागलपन का शिकार था. यह रोग उसे अपने पिता से आनुवांशिक रूप में मिला था. दहेज के प्रलोभन से रोहन की मॉ ने उसका विवाह कर लिया था. चूॅकि वह स्वयं डाक्टर थी अतः अपने बेटे को नियंत्रित किये रहती थी. रोहन को रागिनी के पास नहीं जाने देती थी कि कहीं रहस्य न खुल जाएं.

रागिनी ने अपने मायके में दो वर्ष तक किसी को अपनी सास व पति के व्यवहार के विषय में नही बताया, क्योंकि प्रत्येक पुत्री चाहती है कि हमारे दुःख से हमारे माता–पिता को कष्ट न हो. वह धैर्य धारण किये रही कि आखिर

कब तक यह लोग नहीं पिघलेगें? एक दिन रागिनी को शयन–कक्ष की सफाई करते समय एक डॉक्टर का पर्चा मिला, जो रोहन के पागल होने का पागल होने का प्रमाण प्रस्तुत कर रहा था, जिसे देखकर रागिनी के नेत्रों से अश्रुधारा प्रवाहित होने लगी. अश्रुपूरित नेत्रों से वह अपनी सास के पास पहुँची और उन्हें वह पर्चा दिखाते हुए बोली कि 'ये क्या हैं? पर्चा देखकर सास सकपकाते हुए बोली कि कुछ नही बेटी इसी नाम का एक मरीज है, उसका होगा. रागिनी बेचारी सरल स्वभाव की, वह यह न समझ सकी किसी पागल का पर्चा यहॉ कैसे आ गया, वह भी गद्दे के नीचे. सास ने रागिनी को वशीकरण मंत्रों द्वारा अपने वश में कर लिया था तथा रोहन उसकी ओर से तटस्थ रहता था, जिसका विरोध वह मंत्रों के प्रभावश नहीं कर पाती थीं.

रोहन के पागल होने का रहस्य तो तब खुला जब रागिनी का भाई रोहन के अस्वस्थ होने पर हठ पूर्वक उपचारार्थ उसके साथ गया. रागिनी के परिवार वालों को अत्यंत कष्ट हुआ और वह रागिनी को अपने साथ ले आये. क्योंकि 'एक बंधी–बॅधायी जिन्दगी में कोई सार नहीं है वह बन्द पानी की तरह सड़ने लगती हैं. यह खुली चॉदनी, यह निर्बन्ध हवा, ये मनमौजी नदी–नाले और एक साथ खेलते–खिलखिलाते चेहरे–इनमें से कोई अकेला नहीं हैं. आनन्द अकेलेपन की अनुभूति नहीं है, उसे सामूहिक रूप से ही भोगा जा सकता हैं. लेकिन रागिनी सास के मंत्रो के प्रभाव के कारण वहीं रहने को तैयार थी तथा माता–पिता ने उसे समझाया कि जो व्यक्ति बचपन से पागलपन का शिकार है, वह ठीक तो होने से रहा, इसका निदान तो तलाक ही हो सकता हैं, क्योंकि अकेलेपन की जिन्दगी अपने आप में एक सजा हैं. आन्टी को नाते–रिश्तेदारों तथा पड़ोसियों ने यही सलाह दी कि आप इसका पुनर्विवाह कर दें.

आन्टी रागिनी को लेकर इस उद्देश्य से उसकी ससुराल गई कि शायद दहेज में दिये दस लाख नकद में से आठ लाख वापस मिल जायें. लेकिन रागिनी की सास आन्टी के शिकवे–शिकायत व दहेज वापसी की बात सुनकर बौखला गई और बोली कि आपने दहेज कब दिया? आपने तो आदर्श विवाह किया था. यह बातें सुनकर आन्टी निरूत्तर हो गई और उल्टे पैर लौट आयी, क्योंकि "जो अपनी बुराई को नहीं पहचान पाता, वह कभी सही रास्तें पर नहीं आ सकता. खेद प्रकट करना एक अच्छी बात हैं. उससे मन का सारा भार एक दम उतर जाता हैं. पवित्र आत्मायें कभी अपने भीतर भार नहीं ढोया करती.

बड़ी विडम्बना है कि मनुष्य उत्तरोत्तर उन्नति व विचारों में परिवर्तन के पश्चात भी छलकपट से अपने आपको परे नहीं रख पा रहा हैं. उसकी स्वार्थी प्रवृत्ति इतनी प्रबल होती जा रही है कि वह किसी के भविष्य के साथ खिलवाड़ करने से भी नहीं हिचकती.

31, थानसिंह पीलीभीत, उ.प्र.

तड़पती रही प्यास में जिन्दगी

डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय

दर्द पीती रही स्वयं ही सदा,
पर तड़पती रही प्यास में जिन्दगी।
दीप इसने अनेकों जलाये यहॉ
पर भटकती रही राह में जिन्दगी।।
शूल से ही सदा प्यार इसका रहा,
फूल की गंध भी यह नहीं पा सकी।
गीत लहरों ने हरदम सुनाया इसे,
कुल का संग भी यह नहीं पा सकी।।
नीर नदियों से लेकर नयन में सदा,
है टपकती रही धार सी जिन्दगी। दर्द पीती....
कौन सी अर्चन शेष है रह गयी,
जो नहीं इष्ट को यह स्वयं दे सकी।।
मौन ही साधना के लिए मिट गयी,
यह नहीं 'प्यार का दान भी पा सकी।।
है किया होम सर्वस्व इसने सदा,
पर झुलसती रही आग में जिन्दगी. दर्द पीती.
कष्ट की धारने साथ इसका दिया,
पर किसी ने गले से लगाया नहीं।।
कौन ऐसा बचा है यहॉ पर भला,
जिसने इसको कभी भी रूलाया नहीं।
गिर गयी ओस की बूँद सी यह सदा
देखती ही रही पर गगन जिन्दगी. दर्द पीती.....

पत्रकार भवन, गॅधियॉव, करछना, इलाहाबाद

मिडिया वालों के लिए भारतीय प्रेस परिषद कितना हितकर?

पी.सी.गुप्ता

क्या भारतीय प्रेस परिषद पत्रकारों के हित के लिए हैं? क्या यह संस्था पत्रकारों के साथ होने वाले अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने में सझम हैं? क्या यह दोषी को दंडित करने का अधिकार रखती हैं? ऐसे अनेकों प्रश्न है जिसका उत्तर इस संस्था के पास नहीं हैं. सच पूछा जाये तो यह संस्था एक दिखावा के अतिरिक्त कुछ नहीं हैं.

समस्तीपुर के एक समाचार पत्र के संपादक के निवास सह कार्यालय के मार्ग को एक प्रशासनिक अधिकारी ने आपसी द्वेष के कारण पुलिस के सहयोग से दीवार उठाकर अवरूद्ध कर दिया. उसने भारतीय प्रेस परिषद को पत्र लिखकर अपनी गुहार लगाई. एक लम्बें समय के बाद उनके पत्र का जबाब आया. उसके बाद उन्होंने सभी सबूतों ही नहीं बल्कि अपने ऊपर लगाये गये आरोपों को खण्डित करने वाला प्रमाण भी भेजा. भारतीय प्रेस परिषद ने सम्पादक के साथ हुए अन्याय की जांच रिर्पोट भेजने का निर्देश जिला के आरक्षी अधीक्षक को भेजा. प्रश्न यह उठता है कि क्या कोई पुलिस अधिकारी किसी प्रशासनिक अधिकारी के विरूद्ध रिर्पोट दे सकता हैं? भा.प्रे. प. का यह कदम क्या दर्शाता हैं और ऐसे में अन्याय का शिकार व्यक्ति क्या सोंच सकता हैं? खैर संपादक के शिकायत जाने का सिलसिला जारी रहा और अन्त में पत्रकारों का इस प्रतिष्ठित संस्थाने उस संपादक को सक्षम न्यायालय को जाने का सुझाव दिया. जब अन्याय का शिकार संपादक और पत्रकार न्यायालय का ही शरण लेगें तो भारतीय प्रेस परिषद होने से क्या लाभ?

सम्पादकों और पत्रकारों को एकजूट होकर भारतीय प्रेस परिषद के अधिकारी को यह लिखना होगा कि पहले वे सरकार से दोषी को सजा देने का अधिकार प्राप्त कर लें उसके बाद इस संस्था का कार्य करें. जिससे कि इसकी गरिमा बनी रहें. यदि वे ऐसा करने में सक्षम नहीं है तो इस संस्था को हटा देना श्रेयष्कर होगा. भारतीय प्रेस परिषद के अधिकारी को जनदोषी को दंडित करने का अधिकार मिल जाये तो उन्हं देश के प्रत्येक राज्य के राजधानी में इस संस्था का शाखा स्थापित करना चाहिए एवं वहां का अधिकारी किसी अवकास प्राप्त उच्च न्यायालय के न्यायधीश को बनाना चाहिए जिससे कि संपादक, पत्रकार, छायाकार एवं मिडिया से जुड़े व्यक्तियों के साथ हो रहे अन्याय की सुनवाई शीघ्र हो सके और दोषी को दंड मिल सके. ऐसा करने से लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ के हितों की रक्षा हो पायेगी और प्रेस की गरिमा बनी रहेगी. इसके अतिरिक्त प्रमुख मध्यम एवं लघु समाचार पत्रो के पत्रकारों में भेद भाव रखने वाले प्रशासनिक अधिकारियों के विरूद्ध भी कार्यवाही होनी चाहिए जिससे कि मिडिया से जुड़े सभी व्यक्तियों के हितों की रक्षा हो सके. यदि ऐसा नहीं होगा तो लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ दिन व दिन कमजोर होता जाएगा और चरमरा कर टूट जायेगा. इस कार्य के लिए मीडिया के लोगों का आपसी एकजूटता भी बहुत आवश्यक हैं क्योंकि इसी के बल पर वे अन्याय के विरूद्ध लिखने में सक्षम होगें और अपनी छबि बनाये रखेगें.

जौहर कोठी, समस्तीपुर, बिहार

सुनामी लहरें

इंडोनेशिया के महाद्वीप में
तवाही के मंजर ने गोता लगाया
छब्बीस दिसम्बर वर्ष के अंतिम चरण में
सुनामी लहरों ने बड़ा जुल्म ढाया।
हजारों कि.मी. प्रति घंटे की रफ्तार
ने लाखों जिन्दगी को धरती में समाया,
प्रकृति की प्रलयंकारी भीषण तूफां ने
कई राज्यों में कालिमा बनके छाया।।
कितनी माताओं बहनों की उजाड़ी सुहागें
कितनी गोदी हुई सूनी बुझी कितनी चिरागें,
कितने बच्चे अनाथ हुए है अभागें
जिसने माता-पिताओं के दामन को त्यागे।।
जीव-जन्तु अनेकों दफन हो गये
जो बचे कुछ वहॉ वेवतन हो गये,
उनकी पीड़ा हृदय में चुभन बन गये
अश्रु की धारा ऑखों में फन बन गये।।
गॉव के गांव हलचल में सुप्त हो गये
सारे मछुवारे लहरों में लुप्त हो गये,
होगी भरपाई इसकी न इस जन्म में
जव चमन के चमन सारे उजड़े पेड़।।
दूर संचार विद्युत पोल नष्ट हो गये
साधन-संसाधन संब अस्त-व्यस्त हो गये,
हो गयी क्षीण सब संपदा राष्ट्र की
जिसकी छति पूर्ति मुश्किलों का सबब बन गये।।
इस हृदय विदारक घटना ने सबकों रूलाया
मानव जीवन पर 'महाकाल' बन करके आया,
प्रकृति की विनाश लीला की भूगर्भ में
चंद लहरों ने इतिहास कैसा रचाया
उन सभी आत्माओं की शांति के लिए
'गुप्त' श्रद्धाजंलि अर्पित हैं कर रहें,
ईश्वर से प्रार्थना याचना है यही
जो बचे उनमें धैर्य-धारण की क्षमता भरें।।

अशोक कुमार गुप्त सी.ओ/ श्री जी.एस. विश्वकर्मा, दक्षिणी लोकपुर, नैनी, इलाहाबाद

इस्लाम ने स्त्रियों को जो सम्मान दिया है वह किसी अन्य समाज में देखने को नहीं मिलता। कुरआन ने इतना ही नहीं किया कि महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार दिये और दोनों के बीच भेद भाव को मिटाया बल्कि विस्तार से स्त्रितयों को मॉ बहिन बेटी और पत्नी की हैसियल से समाज में प्रतिष्ठा प्रदान की।

अंतिम भाग

जायज़ कमाई

अभिनव ओझा

रात के ग्यारह बजे आठ आदमी हवली के पास वाले मैदान में पेड़ों के झुरमुट के पीछे दरी पर बैठे थें. दस फीट के फासले पर दो बड़ी-बड़ी हांडियां भट्ठी पर चढ़ी थी. तेज ऑच पर उन हांडियों में कुछ उबल रहा था. दो आदमी थोड़ी-थोड़ी देर में डंडे से खैालते पदार्थ को चलाते रहते. स्पिरिट की गंध पूरे माहौल में फैली थी.

“फौरन कुछ करना होगा” एक स्थूलकाय व्यक्ति ने कहा. बोलते समय उसकी घनी दाढ़ी में कंपन सा हुआ. उसके दाएॅ हाथ में चिलम थीं और आंखों में लाली. “जैसा कहो उस्ताद. कहो तो आज ही साले को खलास कर दें..” एक सांवला, कद्दावर व्यक्ति बोला. स्थूलकाय आदमी ने कहा, “आज बस्ती की औरतों का एक जुलूस कचहरी गया थां. डी.एम. और एस.एस.पी के दफ्तरों के सामने उन लोगों ने काफी शोर शराबा किया. फिर पूरे शहर का चक्कर काटता हुआ हाईकोर्ट पर खत्म हुआ. उन लोगों की मॉग थी कि चूॅकि लॉटरी से उनके घर तबाह हो रहे हैं, इसलिए जल्द से जल्द टिकट खरीदने और बेचने पर पाबंदी लगाई जाएं. और जुलूस का नेता जानते हो कौन था? मास्टर रमाकान्त.सुन तो यह भी है कि उसने डी. एम. से आश्वासन ले लिया हैं कि वे इस संबंध में जरुरी कार्यवाही करेंगें.”

कद्दावर व्यक्ति उत्तेजित होकर स्थूलकाय आदमी से बोला, “अब इस धंधे में दम नहीं रहा उस्ताद. पहले मटका बंद हुआ और अब, जब इस शहर में हमारे छह स्टॅाल खुल चुके हैं, तो छापा पड़ने का खतरा पैदा हो गया. मेरा ख्याल है कि जड़ को ही काट फेंका जाए. न रहेगा बांस न बजेगी बॉसुरी.”

“फौरन कुछ करना होगा.”दिलावर खान ने कहा.

....

नैा जून की सुबह एक दिलकश रंगत लेकर आई थी. नई बस्ती के नुक्कड़ पर, नई बस्ती और स्टेशन के बीच शहर में विशालतम लॉटरी बाजार आज शवाब पर था.

दर्जनों काउंटरों पर सजे बहुरंगी टिकट हवा में फड़फड़ा रहे थें. किशोर, जवान और प्रोढ़ इधर से उधर चहलकदमी कर रहे थें. “धनलक्ष्मी का पंजा है? महाराजा का इक्का निकाल, अब यू.पी. राइफल्स में आज का लकी जीरो हैं. भाग्यरेखा में नहला रिपीट है, धनवर्षा की हैट्रिक होगी कसम से, जरा कामधेनु का छक्का गिन दें, चारों ओर धमा चौकड़ी सी छाई थी. वकील, छात्र, दफ्तर के बाबू, नौकरी पेशा वाले और बेरोजगार, सभी या तो यूॅ ही टहल रहे थें या झुड बनाकर किसी काउंटर पर टिकटों का बारीकी से अध्ययन कर रहे थें. लगता था इनके सुख और सुकून इन्हीं दुकानों पर नीलाम हो रहे थें. एक कोने में रमाकान्त और पन्नालाल में कुछ बातचीत हो रही थी. पन्ना ने उत्साहित होकर कहा, मास्टर साहब, यह आपने बड़ा अच्छा किया जो लॉटरी के इस घातक मसले को आंदोलन का रूप दे दिया. कल के आपके जुलूस ने कईयों की ऑखें खोल दी होगीं.”

रमाकान्त कुछ गंभीरता से बोले, “पन्ना भाई, आज अनगिनत लोग थोड़े से फायदे के लिए अपने सुनहरे भविष्य का गला घोंट रहे हैं. और फायदा भी कैसा? किसी भी खिलाड़ी से अगर पूछा जाए तो वह यही बतायेगा कि आज तक उसने लॉटरी से कितना खोया. मुनाफे की बात कोई नहीं करता. इसकी वजह साफ हैं जो वह लॉटरी से कितना कमाता भी है, उसे फिर उसी लॉटरी में लगा देता हैं. पैसा खत्म होने तक वह पेसे को खत्म करने पर तुला रहता हैं. आज तक शायद ही कोई लॉटरी से कमा कर मकान बनवा पाया हो, या लड़की की शादी कर सका हो. लॅाटरी एक जोंक की तरह ज़िदगी चूसती रही है, और चूसती रहेगी. अगर जल्द ही इस अंकुश न लगाया गया. इससे हजारों को रोजगार मिलता है यह भी सही है, पर उस रोजगार से जुड़ी जिन्दगी किस दिशा में जा रही हैं? आज समाज व परिवार की उन्नति और समृद्धि के लिए लॉटरी का क्या योगदान हैं? सिर्फ नौजवानों को गुमराह करके चोरी या राहजनी करवाना? बच्चों के मुख से निवाला छीनकर धंधेबाजों की तिजोरियां भरना? बीबी के तन पर चाहे समूची साड़ी न हो, पर यह लोग उसके अरमानों की मजार पर सुनहरा कफन जरूर पहनाएॅगें. मेरी एक बात नोट कर लो पन्ना भाई. एम.पी. मे सरकार ने लॉटरी पर रोक लगा दी है, यहॉ भी ऐसा हो सकता हैं बशर्ते जनताा में जागस्कता आए.”

कल्लू की दुकाना पर राजू और विनोद मिलें. विनोद के चेहरे पर ताजगी थी. चहकते हुए बोला, ‘यार राजू कैस हो? आज शाम को यहीं मिलना हैं. याद है न? उस्मान की कोई खबर मिली?‘ राजू ने हताशा भरे स्वर में जवाब दिय, “नहीं यार उस्मान न जाने कहॉ गायब हो गया. उसके घरवालें रो-रोकर हलकान हैं और कल रात से छेनू गुरू का भी कहीं पता नहीं. मैं उसके करीब-करीब हर अड्डे पर पता कर चुका हूॅ.” विनोद ने राजू के कंधे पर हल्का हाथ मारते हुए कहा, “छोड़ यार उस्मान को. अगर उसे वादा पूरा करना होगा तो आज शाम तक का समय हैं. छेनू गुरू को भी तभी ढूॅढ लेगें.”

उधर कल्लू भी आज काफी खुश था. दुकानदारी आज सुबह से ही ताबड़तोड़ हो रही थीं. वह एजेन्ट भी था और आज शाम तक उसे एक मोटी कमीशन मिलने की पूरी उम्मीद थी. उसकी खुशी का एक कारण यह भी था कि राजू और विनोद के आने से थोड़ा पहले उसके दो बहुत पुराने ग्राहक साढ़े चार हजार के टिकट खरीद कर गए थें. एक तो अशोक यादव, जिसने पिछले साल लाखा फॅसानें के लिए अपनी किराने की दुकान गिरवी रख कर कर्ज लिया था और अब उस पर लाखा कर्ज चढ़ चुका था. दूसरा ग्राहक था बच्चा पहलवान, जो इतना दिलेर था कि ससुराल से मिली नई हीरों होंडा काउंटर पर न्यौछावर कर चुका था. दोनो वाकई हिम्मती थें और

आज तक हौसलां रखकर लॉटरी से लोहा ले रहे थें.

रमाकान्त ने पन्नालाल से विदा ली और चौराहे की ओर बढ़े. अभी वे मुश्किल से चार ही कदम चले होंगे कि दिल दहलानें वाला धमाका हुआ. एक भयंकर विस्फोट, जैस लावा फूट पड़ा हो, ने सभी को हिला कर रख दिया. जो जहॉ था, वहीं जड़ हो गया.एक के लिए जैसे समय रुक गया. आवाजें बंद हो गई, सॉसे थम गईं.

कुछ पल बाद कोलाहल और शोरगुल का तूफान सा उठा. सभी उस दिशा में दौड़ें, जिध र ज्वालामुखी फटा था.

मास्टर रमाकान्त की रक्तरंजित लाश लैम्प पोस्ट के ठीक नीचे पड़ी थी. बाएँ हाथ के परखचे उड़ गए थें और उनका चेहरा-वह शांत, सौम्य चेहरा जिसके अंधरों की मुस्कान को वक्त और जिंदगी की कोई तपिश नहीं मिटा सकी थी, मांस का लोथड़ा वन कर रह गया था.

"मास्टर साहब! यह क्या हुआ?" पन्नालाल पूरी ताकत से चिल्लाया. रमाकान्त के लहुलुहान शरीर को बॉहों में भींच कर पन्ना दहाड़ मार कर रोने लगा. दूसरी ही पल सारा बाजार इकट्ठा हो गया. हर चेहरे पर शोक की छाया थी. कई जोड़ी ऑखों में ऑसू छलछला आएं.

आज नई बस्ती का हीं नहीं, पूरे शहर का एक मसीहा शहीद हुआ था. प्रेम और अहिंसा का दरख्त जो न जाने कितने पौधों को छाया देता रहा था, आज धरती की गोंद में सदा के लिए विलीन हो चुका था.

सात मिनट बाद एक छह फुटा आदमी अपने घुॅघराले बालों में अंगुलिया फिराता हुआ गली के रास्तें तेजी से गायब हो गया.

अभी इस सदमें से कोई उबर भी न पाया था कि कई गाड़ियों के साथ रुकने की आवाज से पूरा बाजार गूंज गया. ब्रेक की चीख ने सभी आवाजों को दबा दिया.पन्नालाल से सिर उठा कर देखा दो पुलिस जीप जिनमें आठ दस पुलिसकर्मी भरे थें, सामने खड़ी थी. उनके पीछे एक नीला ट्रक भी धीरे-धीरे रुक रहा था. ट्रक खाली था. एक ही पल में खामोशी छा गई. कानाफूसीं बंद हो गई और सभी निगाहें उस ओर घूम गईं.

कोई कुछ समझ पाता इससे पहले आठ सिपाहियों ने भीड़ पर लाठिया भॉजना शुरु कर दिया. पीछे दो सब इस्पेक्टर रिवॉल्वर लिए खड़े थें. अचानक हुए इस लाठीचार्ज से जैसे जलजला आ गया. जिसकों जहॉ मिला, भागा. लाठी की आवाज और चिल्लानें के बीच लोग एक दूसरे से टकरा जाते, गिरते, उठतें और फिर भागतें. पुलिस की लाठियां थमने का नाम हीं नहीं ले रही थी. चटाक... चटाक की आवाज से सारा माहौल गूंज उठा. भगदड़ और अफरा तफरी में न जाने कितनों का सिर फूटा, कितने पैर कुचल जाने से जमीन पर लोटने लगे और कईयों के कपड़ें तार-तार हो गए. राजू के हिस्सें में तीन और विनोद के हिस्से में पांच डंडे आएं. धर्मपाल का लहू कटे हुए माथे और अमरनाथ का खून होठों से बह निकला.

दस मिनट तक चली इस पिटाई के बाद लॉटरी स्टॉलों की बारी आई. एक दुकान नहीं बख्शी गई. दुकानों के पटरे टूटे और कुर्सियां और स्टूल बूट तले रौंद दिए गए. सवा ग्यारह बजे जब पुलिस की तीनों गाड़ियां रवाना हुई तो ट्रक में कल्लू, विनोद, राजू, दिलावर और रमाकान्त की लाश के साथ चौबीस आदमी और थें. सभी के हाथ रस्सियों से जकड़े थें. बाल धूल से सने थे और गर्दनें झुकी थी.

दो सिपाहियों को गश्त पर छोड़कर पुलिस की गाड़ियॉ धूल उड़ाती हुई आंखों से ओझल हो गई.

....

नौ जून, रात के साढ़े दस बजे नटराज होटल के शानदार डाइनिंग हॉल, महफिल में तीन व्यक्ति एक गोल टेबल से सटी नी कुर्सियों पर अगल बगल बैठे थें. डिम लाइट और ग़ज़ल की मद्धिम धुन से एक पुरकशिश समा बॅधा था. सिगरेट के नीले धुएँ, व्हिस्की की गंध और फ्रेंच परफ्यूम की भीनी महक से महफिंल सुरूर पर थी. फैशनपरस्त औरतों की खनखती हंसी और सूटधारियों की धीमी आवाज पर बैयरे तेजी से घूम रहे थें.

धनराज महेन्द्रू ने बैगपाइपर का एक बड़ा पैग बनाया. फॉरसेप से आइसक्यूब डालने पर कुछ बूँदें गोल मेंज के चिकने सनमाइका पर पड़ी और पत्तों पर जमी शबनम की तरह चमकने लगीं. धनराज ने एक घूंट लिया, रोस्टेड का जायका लिया और बगल की मेज पर निगाह डाली. कुछ खद्दरपोश कैन्डललाइट डिनर में मसरुफ थें. तंदूरी मुर्ग का एक टुकड़ा ठंडे मारबल पर बिछे सात लाख के कार्पेट पर गिरा जिसे एक खद्दरपोश ने अपनी कोल्हापुरी से मसल दिया. धनराज मुस्कराया, ट्रिपल फाइव का कश खींचा और भारतभूषण सिसौदियां से मुखातिब हुआ, रहा हूॅ."हॉ तो सिसौदिया साहब! आपका वो रेलवे वाला टेन्डर पास हो गया? भई सुना हैं दो करोड़ का प्रोजेक्ट हैं."

सहसा हॉल के सिल्क परदों में होटल के फाउन्टेन परछाई पतंग की तरह थिरकी. नब्बे हजार के शैन्डेलियर्स की ऑच में लाल, सुर्ख चेहरे दमक उठें.

सिसौदियां ने गिलास नचाते हुए जवाब दिया, "वो सब तो ठीक हैं, लेकिन फास्ट फूड की तरह नोट कमाना तो कोई तुमसे सीखें. लॉटरी के पार्ट टाइम धधें से तीन महीने में आधा करोड़ कमाना माएने रखता हैं."

तीसरे व्यक्ति से मुखातिब होकर धनराज बोला, "आज सिसौदियां का मूड अच्छा हैं. वरना कल तो जनाब मरीजें इश्क की तरह पैमाने में गोते लगा रहे थें. जब मैंने कहा कि आज भारत उदास है तो फरमानें लगे कि जब तक तुम जैसे कैपिटेलिस्ट हाजमें से ज्यादा पैसा कमाते रहेंगें, तब तक भारत उदास रहेगा. बड़ा कम्युनिस्ट बनता हैं साला. सैकड़ों पद यात्राएँ, तालाबंदी और जेल भरों आदोंलनो में शिरकत करके उसने अवाम की अथक सेवा की थीं. भारतभूषण सिसौंदिया, तीन कॉटन मिलों का मालिक, मेज पर ध ीरे-धीरे तबला बजाने लगा. हाथों की थिरकन से तर्जनी में पुखराज, मध्यमा में हीरे और अनामिका में सोने की अंगूठियां चमकने

ललित नारायण उपाध्याय

आत्मजः श्री शिवनारायण उपाध्याय
माता : श्रीमती सुभद्रा देवी उपाध्याय
शैक्षणिक योग्यताः एम.ए. (अर्थशास्त्र), बी.एड. एल.एल.बी
क्रियाकलापः अवैतनिक पत्रकार, समीक्षक, शासकीय व्याख्याता वेतनमान में कार्यरत, जन्मः ११ नवम्बर १९४३, खंडवा, म.प्र. साहित्यधर्मी,संस्कारवान उपाध्याय परिवार में किशोर अवस्था से ही लेखन में गहरी रूचि, बाल साहित्य की प्रारंभिक रचनाएँ, धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, नवभारत टाईम्स जैसे पत्रों में प्रकाशित हुई. आज देश की हर श्रेष्ठ एवं शीर्षस्थ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने का सौभाग्य अनेक अखिल भारतीय फीचर्स रीलिज, हँसी एक राष्ट्रीय प्रयास (व्यंग्य निबंध), कुछ सांस्कृतिक कुछ प्रासंगिक, हमारे राष्ट्र स्तम्भं (निबंध)
दो दो बार उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनउ, एवं मध्य प्रदेश साहित्य परिषद भोपाल से पुरस्कृत एवं सम्मानित होने का सौभाग्य प्राप्त
अनेक लेख, देश एवं प्रदेश स्तर पर प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत, साहित्यिक ५ कृतियां ज्ञान-विज्ञान की २० नॉलेज बुक्स, किशोर साहित्य की १२ एवं बाल साहित्य की १८ प्रकाशित. लोक माधुर्य कविता एवं व्यंग्य, निबंध लघुकथा तथा ज्ञान-विज्ञान की ८० कृतियां प्रकाशन की प्रतीक्षा में हैं. गोष्ठियां, सेमनिरों, अभिनंदन ग्रंथों, संदर्भ ग्रंथों, वार्षिकीयों, श्रेष्ठ रचना ग्रंथों, शोध प्रबंधों, सघों, परिसंवादों एवं अखिल भारतीय संस्थानों में सक्रिय सहभागिताएं, यथा एन.सी.ई.आर.टी, स्टेट चिल्ड्रन अकादमी(केरल) ,हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, भारतीय बाल कल्याण संस्थान, कानपुर, मनीषिका कलकत्ता आदि में सक्रिय भागीदारिता. अनेक अकादमियों से सम्मान, पुरस्कार एवं 'नार्मदीय शिरोमणि जैसी उपाधियां प्राप्त. साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक संस्थाओं में भागीदारिता. संस्थापक, कोषाध्यक्ष, मानद् महासचिव, भारतीय बाल एवं युवा कल्याण संस्थान, पूर्व जिला नोडल अधिकारी, विकलांगों की समेकित शिक्षा, एड्स शिक्षण श्रोत शिक्षक, जैसे पदों पर रहकर बाल व किशोर कल्याण व उत्थान की उल्लेखनीय सेवाएं एवं सफलताएं. संचालक साहित्य सौहार्द योजना, व्यक्तित्व-कृतित्व पर विश्लेषणात्मक ५ विशेषांको का प्रकाशन, एक लघु शोध
सम्पर्कःईश कृपा सदन, ९६, आनंद नगर, खंडवा, म.प्र. ४५०००१ दूरभाषः 0733-224949,फैक्सः 0733 - 2249400, 2221174 ❍

लगी. धनराज ने एश ट्रे में सिगरेट मसलते हुए कहा, रमाकान्त की मौत से धर्मराज का रास्ता साफ हो गया. धर्मराज धनराज का साला था और आने वाले चुनाव में उसी वार्ड का उम्मीदवार था जिसमें नई बस्ती आती थी.
"दो फायदें मेरे हुए. एक तो दिलावर खान का कर्ज उतरा और दूसरा, मेरा इंतकाम पूरा. पिछले साल जब इंजीनियरिंग कॉलेज में मेरा ब्राउन शुगर पहला कन्साइन्मेंट उतरा था, तो इसी मास्टर रमाकान्त के इशारे पर इसके एक जर्नलिस्ट दोस्त ने ऐन मौके पर रेड डलवा दी थी. चार लाख का नुकसान हुआ था." तीसरे शख्स, जिसका कद ऊँचा और बाल घुघराले थे और जो अपने जमाने में सारे शहर में छेनू दादा के नाम से मशहूर था, ने चुप्पी तोड़ते हुए कहा. ....
दस जून का सूरज उदय हुआ. ठंडी हवा के झोकों और सूर्य की सुनहरी किरणों के बीच एक नया सवेरा हुआ. धर्मपाल की झोपड़ी का किवाड़ खुला और हवलदार सिद्धेश्वर पांडे बाहर निकला. माथे पर छलकती पसीने की बूँदों को उसने कमीज की बांह से पोछा और पनामा जलाई. धीरे-धीरे चलता हुआ वह नीम के पास अया जिसके नीचे धर्मपाल बैठा सुरती बना रहा था. उसको देखकर धर्मपाल फौरन उठा और हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया. हड़बड़ी में सुरती जमीन पर जा गिरी. हवलदार ने धुऑ धर्मपाल के मुँह पर छोड़ते हुए कहा, "आज रजुआ दोपहर तक आ जाएगा. कोर्ट कचहरी का कोई चक्कर नहीं. मैने सारी बात कर ली हैं."
बीस मिनट बाद परमानन्द की दुकान पर हवलदार पांडे और हवलदार रामकृपाल चौरसियां की मुलाकात हुई. सौ ग्राम जलेबी मलाईदार दूध के साथ खाते हुए सिद्धेश्वर ने कहा, "जिंदगी में बहुत दम है प्यारे. बसी वर्दी सलामत रहें."
रामकृपाल चुप रहा. इशारे से परमानन्द के लड़के को बुलाया और पान मंगवाया. एक-एक जोड़ा ककेर पान दबाने के बाद दोनो तन कर बैठ गए. रामकृपाल मूँछ पर ताव दे रहा था. सिद्धेश्वर ने भोला तम्बाकू की पुड़िया खोलते हुए पुड़िया के कागज पर एक उचटती निगाह डाली. वह कागज लॉटरी का एक टिकट था. सिद्धेश्वर ने दबी आवाज में
पूछा, "क्यों कृपाल! कल की नौंटकी में तेरी कितनी कमाई हुई?"रामकृपाल ने जवाब दिया, "भैया मेरा तो सिद्धात है कि उतना ही खाओं जितना पचा सकों. तुम्हारी तरह ज्यादा नाजायज कमाई पर मैं यकीन नहीं करता." सिद्धेश्वर पांडे मुस्कराया. पीक थूकते हुए उसने कहा, "जब स्टेट लॉटरी से करोड़ों रुपये रोज खड़ा करने वाली प्रदेश सरकार की कमाई नाजायज नहीं है, तो मेरी भी एक-एक पैसे की कमाई जायज हैं." ❍

हमें खेद है कि पिछले अंक में पृष्ठ १० पर नेताय नमो नमः में लेखक का नाम छूट गया था. इस लेख के लेखक का नाम **'डॉ. प्रणव शास्त्री** पढ़ें

बच्चों को दें शिक्षा का संस्कार

रामचन्द्र राठौर

आज के भौतिक युग में हम भौतिक सुविधाओं को पाने के लिए भागे जा रहे है. हमें केवल हमारी सुध बुध है. हमारे बच्चों की शिक्षा व संस्कार से पैसा देकर निश्चिंत हैं. जबकि बच्चों के पास उठने–बैठने, उनकी समस्याओं को समझने का हमारे पास समय नहीं हैं. हम पैसे से दवाई खरीद सकते हैं, चैन नहीं, बिस्तर खरीद सकते हैं नींद नहीं, वैसे ही हम भौतिक सुविधाएं एकत्रित कर सकते हैं शिक्षा व संस्कार नहीं खदी सकते हैं. इसलिए मेरा तो यही निवेदन है कि 2रू. की चाय कम पी लेना पर बच्चों को शिक्षा व संस्कार अवश्य देना. शिक्षा व संस्कार परिवार के सारे सुख शांति की चाबी हैं. जिसने शिक्षा व संस्कार बच्चों को नही दिये, दुख उन्हें ही भोगने पड़े हैं. उन्हें तरह–तरह के पापड़ बेलने पड़ते हैं. बिना शिक्षा व संस्कार के बच्चें उद्‌ण्ड हो जाते हैं. वे कुसंगति में पड़कर अपना ही नहीं परिवार को विपदा में डाल देते हैं. अच्छी शिक्षा व संस्कार से बच्चों में अच्छी आदतों का विकास होता हैं. वे सद्‌गुणों का सद्‌प्रयास करते रहते हैं. आत्मनिर्भरता तथा आत्मबल से लबरेस रहते हैं. वे किसी की कृपा के मोहताज नहीं रहते हैं. तिकड़मबाजी से काम न लेते हुए मेहनत से काम लेते हैं. परहित पर ध्यान देते हैं, कमाऊ के साथ संतोषी होते हैं, धीरवीर होते हैं. सबका ध्यान रखते हैं. बिना शिक्षा व संस्कार के बच्चों का जीवन व्यर्थ हैं. वे अपव्ययी हो जाते हैं. शिक्षा व संस्कार चरित्रनिर्माण की धुरी हैं. शिक्षा से संस्कार जुड़ा हैं. शिक्षा की अपनी समस्यायें है वहीं दूसरी ओर सुविधाए भी हैं. शिक्षित जरूरी नहीं कि संस्कारित भी हो किंतु शिक्षा के द्वारा ही परिवार में बच्चों में संस्कार डाले जा सकते हैं. संस्कार बच्चें के परिवार की पहचान होते हैं. कई बार देखने में आया है कि लोगों के पास काफी रूपया पैसा है. कार और बगले हैं, बड़ी बड़ी शिक्षा की डिग्रीया हासिल कर ली हैं किंतु कमी है तो बस अच्छे संस्कारों की, अच्छे विचारों की. बच्चों को पैसे न देकर उनकी अच्छी शिक्षा व संस्कार पर ध्यान दें. अच्छी शिक्षा से सदाचार का निर्माण होता हैं. अच्छी शिक्षा व संस्कार वाले बच्चे बुढ़ापे का सहारा होते हैं. आप बच्चों पर ध्यान देगें उनका दुख दर्द समझेंगें तो बेशक वे आपका विश्वास भी उतना ही करेंगें. बिना शिक्षा व संस्कार के बच्चें समस्या बन जाते हैं. वे भी परेशानी उठाते हैं तथा परिवार भी परेशान हो जाता हैं. किसी भी जाति, धर्म, परिवार, राष्ट्र का विकास अच्छे चरित्र निर्माण पर टिका हैं. इसके लिए हमें महान लोगों के चरित्र का अनुशरण करना होगा. बच्चों को गांधी, नेहरू, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद की जीवनीयां प्रेरणादायक कहॉनिया, पढ़ानी होगी, उनके आदर्श प्रस्तुत करने होगें. तभी हम बच्चों में शिक्षा व संस्कार वान बना सकेगें. बच्चो के संगतीयों पर पूरी नजर रखनी होगी. बच्चों पर खर्च करें किन्तु अनावश्यक नहीं. बच्चों को उनके हाल पर न छोड़ें वरन उनका सतत मार्गदर्शन करें जहॉ आवश्यक हो वहां प्रोत्साहन भी दें. बच्चों में शिक्षा व संस्कार के गुण डालना एक यज्ञ से कम नहीं हैं. इस पुनीत यज्ञ में आपको भी त्याग की पूर्णाहूति देनी ही होगी. इसलिये बच्चों को शिक्षा व संस्कार अवश्य दें.

ग्राम–लालाखेड़ी कुल्मी, पो. धुन्सी, जिला–शाजापुर, उ.प्र.

स्नेह बाल प्रतियोगिता–४

प्यारे बच्चों यह ईनामी प्रश्न प्रतियोगिता आपके लिए हैं. इस प्रतियोगिता में 8 वर्ष तक की उम्र का कोई भी बालक/बालिका भाग ले सकता है. आप इन प्रश्नों के उत्तर हमें 31 मई 2005 तक साधारण डाक से भेजें. सभी प्रश्नों के सही हल बताने वाले ढेरों ईनाम दिए जाएगें.

प्रश्न निम्न है–

प्रश्न1.क्या आपको स्कूल में पढ़ना अच्छा लगता हैं?

प्रश्न 2. आपको अपने दादा–दादी अच्छे लगते हैं?

प्रश्न 3.आप अपने अध्यापक के दंड देने पर क्या सोचते हैं?

प्रश्न 4.आपको कौन सा क्रिकेट खिलाड़ी सबसे अच्छा लगता हैं?

प्रश्न 5.आप फिल्म देखते हैं क्यों?

प्रश्न 6. आप किताब पढ़ना पंसद करते हैं या धारावाहिक देखना?

प्रश्न 7. गर्मी की छुट्‌टियों में आप क्या करते हैं?

प्रश्न 8. आपको कौन सा नेता पंसद हैं?

प्रश्न 9. आपको कैसा अध्यापक अच्छा लगता हैं?

प्रश्न 10. आपका छोटा भाई शरारत करें तो क्या करेगें?

नीचे दिये गये कूपन को साथ में अवश्य भेजें–

कूपन

प्रतियोगी का नामः.................................

पिता का नाम :...

उम्रः.................... कक्षाः ....

स्कूल का नामः...

पताः ....

द हंगामा इंडिया

एक पूर्व सांसद , बीड़ी श्रमिक के रूप में कार्यरत

"एक पूर्व सांसद बीड़ी श्रमिक के रूप में अपनी गुजर बसर कर रहे हैं, वह भी जनसंघ के." इस वाक्य को पढ़कर सहसा विश्वास नहीं होता लेकिन यह सौ प्रतिशत सच है.

सागर में पुरव्याऊ टौरी वार्ड में रहने वाले ६७ वर्षीय रामसिंह शिक्षक की नौकरी छोड़कर राजनीति में आए थें. वे १९६७ में जनसंघ के टिकट पर सागर आरक्षित सीट सें सांसद चुने गयें. उन्होंने काग्रेस की श्रीमती सहोदरा राय को करीब तीन सौ मतो से हराया था. रामसिंह तीन साल ९ महीने तक सांसद रहे लेकिन उसके बाद सुख तो दूर खुद के अधिकार भी रामसिंह के लिए बस सपना बन कर रह गया. उन्हें पूर्व सांसद की कोई भी सुविधा नहीं मिल रही, यहां तक कि वे वृद्धाश्रम पेंशन के भी मोहताज हैं. गरीबी रेखा की सूची में नाम न होने से रही सही कसर भी पूरी हो गई हैं. रामसिंह बताते हैं कि चौथी लोकसभा के सांसदों को मिलने वाली पेंशन संबंधी प्रावधान आज तक नहीं बन पाया हैं.

उनके आर्थिक हालात भी ऐसे नहीं है कि वे पेंशन अथवा अन्य सहायता के बिना गुजर-बसर कर सकें. रामसिह के सासद बनने के दौरान भी उनकी पत्नी श्रीमती राजरानी बीड़ी बनाती रहीं. वे कहते है कि पेंशन अथवा अन्य सहायता के लिए जब भी सरकारी दफ्तर से संपर्क करते हैं तो लोग व्यंग्य के साथ कहते हैं आप तो सांसद रहे हैं क्या कमी हैं? सरकार से तो कुछ मिलता ही होगा.

साभारः तुमुल तुफानी

गजल

शब्दों की गूंज फिर मुझे दीवना कर गई
सन्नाटा चीरता हुई दिल में उतर गई
दीवार पर लगी हुई तस्वीर बोल उठी
कमरे में एक अजीब सी खुशबू बिखरगई
बेरंग मौसमों का जमाना हैं आजकल
महके थे जिसमें ज़ख़्म वह रुत भी गुजर गई
दो दिन की जिन्दगी में न बेदांग रह सके
ये जिन्दगी भी जीने का इल्ज़ाम धर गई
मायूसियें ने घेर लिया फिर से 'रचश्री'
उम्मीद की किरण भी न जाने किधर गई

रमेश चन्द्र श्रीवास्तव, एल.आई.यूं. कोतवाली कैम्पस, फतेहगढ़, उ.प्र.

औरत त्याग और अहिंसा की मूर्ति है।

महात्मा गांधी

दुनिया में जिससे दोस्ती करो उसे बचाने के लिये दिंलो जान से हमेशा तैयार रहो क्योंकिं दोस्ती इम्तिहान लेती है।

डॉ0 केवलकृष्ण पाठक सम्मानित

राजश्री स्मृति न्यास साहित्यिक संस्था, कोलकाता के तत्वावधान में सम्मान श्रृंखला - ४६ के अन्तर्गत रवीन्द्र ज्योति मासिक पत्रिका, के प्रधान संपादक डॉ. केवल कृष्ण पाठक को पश्चिंम बंग, बंगला अकादमीके जीवनानन्द सभागार में २७ फरवरी ०५ को 'राजश्री' सम्मान से अलंकृत किया गया. साहित्यकार श्याम लाल उपाध्याय ने पाठक के जीवन वृत्त का आलेख पाठ प्रस्तुत किया और अंगवस्त व शाल,. जूही जायसवाल ने रोली-अक्षत, प्रो. अनिल राय ने श्रीफल, अंकिता जायवसवाल ने लेखनी एवं कुवंर वीर सिंह मार्तण्ड नें 'समृद्धि का सदुप योग' पुस्तक भेंटकर उत्सव मूर्ति का सम्मान किया. अध्यक्षीय भाषण में डॉ. विश्राम वसिष्ठ ने डा. पाठक के दीर्घायु होने की कामना की तथा कलकत्ता की साहित्यिक गतिविधियों पर प्रकाश डाला. कार्यक्रम के अंत में संस्था के संस्थापक श्री जगदीश प्रसाद साहा ने अतिथियो के प्रति आभार व्यक्त कर कार्यक्रम का समापन किया.

वैद्यनाथ धाम में शिवरात्रि व शिव बारात का आयोजन

✍कुन्दन कुमार खवाड़े

महाशिवरात्रि के अवसर पर मनोकामना लिंग बाबा वैद्यनाथ में विशेष दिव्य पूजा अर्चना व अद्भूत शिव बारात निकाली गयी. आदिकाल से चली आ रही पंरपरा के तहत 8 मार्च को बाबा बैद्यनाथ की प्रातः कालीन पूजा के साथ महाशिवरात्रि की विशेष पूजा भी हुई. इस पावन अवसर पर श्रद्धालुओं ने मोर चढ़ाने की पंरपरा को निभाया, मोर चढाते वक्त जो भी मांगा जाता है, आदिदेव उसे अवश्य पूरा करते हैं. ऐसी मान्यता हैं. गौरतलब है कि झारखंड के देवघर में श्रावण मास के बाद महाशिवारात्रि में भी लाखों की संख्या में देश–विदेश के भक्त आते हैं, इमें मुख्यतः उत्तर प्रदेश, पं. बगांल, मध्य प्रदेश, नेपाल, देवधर के अतिरिक्त सारठ, साखां, करों, वासुकीनाथ धाम में भी हर्षोल्लास के साथ महाशिवरात्रि का पर्व मनाया जात हैं. वैद्यनाथ ध ााम देवघर में महादेव की पूजा क अतिरिक्त यहां से निकलने वाले शिव बारात का विराट रूप भी देखने लायक होता हैं. 1994 से प्रारंभ हुए इस बारात में समूचे नगरवासियों के अतिरिक्त जिला प्रशासन की भी काफी अह्म भूमिका होती हैं. इस अवसर पर बाबा धाम को दुल्हन की तरह सजाया जाता हैं. पुष्पवर्षा, शर्बत, फलाहार, इत्र वर्षा के साथ साथ जय शिव से नगर, गुजांयमान रहता हैं. इस दिन नगर पूरी तरह भक्तिमय हो जाती हैं. देवधर में शिवरात्रि क`अवसर पर पंचशूल की भी पूजा अर्चना करने का विधान हैं. बाबा, मंदिर में लगे इस पंचशूल का दर्शन दुर्लभ माना जाता हैं.

महाशिवरात्रि के दिन रात्रि में स्थानीय विद्वत कर्मकांडी ब्राहमणों द्वारा चारों प्रहर पूजा की जाती हैं. जिसमें प्रथम प्रहर में दूध से द्वितीय प्रहर में दही से, तृतीय प्रहर में घी तथा चौथे प्रहर में मधु से पूजा की जाती हैं. पूजा दर्शनीय रहता हैं, किंतु भीड़ की अधिक संख्या को देखते हुए एस.टी.एफ के जवानों द्वारा इस विशेष पूजा के दर्शन को सामान्य जनता के लिए नही खोला जाता हैं.

गोविन्द खवाड़े लेन, देवधर, झारखंड

सुप्रभात

कवि एवं उनकी कविताांए (भाग 2)

कवियों का सचित्र परिचय सहित उनकी कविताओं का अनूठा संकलन सहयोगी आधार पर प्रकाशित किया जा रहा है जो कई खण्डों में छपेगा। इसी प्रकार कहानी एवं लघुकथाओं का भी अलग–अलग संग्रह छपेगा। कृपया अपनी रचनाएं हमें निम्न पते भेंजे अथवा सम्पर्क करें।

सम्पर्क करें या लिखें:– मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज', एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद **कानाफुसी**: 9335155949

क्या है रसोई गैस बीमा?

आज रसोई गैस से होने वाली दुर्घटना एक आम बात हो गयी हैं. इस दुर्घटना से बहुत से परिवारों को आर्थिक तथा मानसिक क्षति का सामना करना पड़ता हैं. गृहिणियां नहीं जानती कि रसोई गैस बीमा जैसी कोई चीज होती हैं, जिसके कारण क्षति की भरपाई करने में वर्षो लग जाते हैं. ऐसा ही कुछ श्रीमती शिवानी शेखर के साथ हुआ. सिलेंडर से हुए विस्फोट के कारण उनके पति तथा पुत्र की मृत्यु हो गई तथा शिवानी जख्मी हो गई. शिवानी ने इसके लिए कंपनी को जिम्मेदार माना और बीमा की रकम के लिए क्लेम किया. भारत पेट्रोलियम कार्पोरेशन ने क्षतिपूर्ति के रूप में ७ लाख ५० हजार रूपये शिवानी को दिए.

रसोई गैस बीमा क्या हैं?

आप जब डीलर से रसोई गैस का कनेक्शन लेती हैं, तो इसकी खरीदी के साथ ही आपके रसोई गैस का बीमा हो जाता हैं क्योंकि यह वितरक की जिम्मेदारी होती है कि वह उसके गोडाउन से सिलेंडर की डिलेवरी होने के पश्चात तथा आपके घर में उपयोग होने की स्थिति में होने वाली दुर्घटनाओं के लिए बीमा करवाएं. इस बीमा के अंतर्गत किसी भी प्रकार की दुर्घटना होने पर बीमा कंपनी नुकसान की क्षतिपूर्ति अदा करने के लिए उत्तरदायी हैं.

बीमा रकम प्राप्त करने के लिए सावधानिया-

दुर्घटना के पश्चात् यह जांच की जाती हैं कि आपने गैस चूल्हा, रेग्युलेटर तथा गैस ट्यूब आईएसआई मार्क का इस्तेमाल किया है या नहीं. गैस ट्यूब की सामान्य आयु २ वर्ष होती हैं. अतः यह सावधानियां अवश्य बरतें. आपकों कंपनी की ओर से नाममात्र राशि अदा करने पर एक पुस्तिका दी जाती हैं जिसमें आपके द्वारा ली गई हर डिलेवरी आदि का विवरण दर्ज करना होता हैं. आपको इसे आने वाले कर्मचारी से भरवाकर रखना चाहिए, क्योंकि दुर्घटना की स्थिति में यह दस्तावेज आपके लिए काफी महत्वपूर्ण हो जाते हैं. इस प्रक्रिया के बाद भी अगर आपको क्षतिपूर्ति की राशि नहीं मिलती, तो आप उपभोक्ता अदालत मे केस दायर करें.

क्लेम कैसे करें?

रसोई गैस से किसी भी तरह की दुर्घटना होने पर तत्काल अपने वितरक को सूचित करें, साथ ही स्थानीय पुलिस को सूचित करते हुए यह पता करें कि वितरक ने आपके दुर्घटना के संबंध में बीमा कंपनी को सूचित किया हैं या नहीं. आप अपने नुकसानों की समस्त जानकारी बीमा कंपनी को वितरक के द्वारा क्लेम फार्म भरकर करें. इस तरह क्लेम करने पर बीमा कंपनी क्षतिपूर्ति के लिए उत्तरदायी होगी.

(साभार : ऋषि की आवाज)

रजिस्ट्रेशन ऑफ न्यूज पेपर (सेन्ट्रल) रूल्स १९५६ के अन्तर्गत 'विश्व स्नेह समाज' मासिक पत्र के संबंध में स्वामित्व तथा अन्य विवरण

घोषणा (फार्म ४)

१. प्रकाशन स्थल : २७७/४८६, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद
२. प्रकाशन क्रम : मासिक
३. मुद्रक : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
नागरिकता : भारतीय
मुद्रण स्थान : भार्गव प्रेस बाई का बाग, इलाहाबाद
४. प्रकाशक : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
नागरिकता : भारतीय
पता : एल.आई.जी-९३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
५. सम्पादक : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
नागरिकता : भारतीय
पता : उपरोक्त
६. स्वत्वाधिकार : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
नागरिकता : भारतीय
पता : उपरोक्त

मैं गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी यह घोषित करता हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरी जानकारी तथा विश्वास के अनुसार सही हैं.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
सम्पादक

एक किरण चाहिए

आर-पार बेधे जो अंधकार सारा
ओ समर्थ सूर्य मुझे एक किरण दे दें।
हर कहीं विसंगति का हर पल आवाहन,
जीवन में अभिशापों का नहीं विसर्जन
नारी है सांसों का हर मुकाम मंथन
मन कितना बेबस है, व्याकुल बेचारा,
हर क्षण हर संकट का निराकरण दे दे।
जर्जर है यह जीवन रोज जहर पीकर
बढ़ते रहते तनाव हर अलाव जीकर
मतलबी बहावों का निठुर हीं रहा स्वर,
हर विकार रचता है एक नई कारा
आस्था, विश्वास भरे सबल चरण दे दें
किरणों को पा कर मन-पंछी चहकेगा
ताजगी लिये समीर हर पल महकेगा,
वन-उपवन में पलाश कोई दहकेगा
चाहूँगा ज्योतित हो जीवन की धारा
सपनों को फागुन का आमंत्रण दे दे।।

डॉ. भगीरथ बड़ोले
286,विवेकानंद कॉलोनी,फ्रीगंज उज्जैन, म.प्र.

सांसों के दीप जलें कैसे....?

भारत मॉ का ऑचल लहू से लथपथ,
नारी अस्मिता लुट रहीं सरे बाजार,
बारूद बिछी है यत्र-तंत्र सर्वत्र
कबाड़ में छिपे विस्फोटक हथियार
सांसों के दीप जले अब कैसे,
मानव-मन संतृप्त, अवसाद सघन
धरती के स्वर्ग पर मौत का ताण्डव
आतंकवाद के साये में कैसा जीवन
कुछ व्यथा-वेदनां कुछ मजबूरियां
इनके चेहरे पर साफ दिखाई देती हैं
दहशत तक सिमटी इनकी दुनिया
गूंजती गोलियां, आवाज सुनाई देती हैं
क्यों झोपड़ी बीमार, सिसकती रोती,
फुटपाथ का जीवन, बसर लोगों की व्यथा,
वे पत्थर विछाते, ओढ़ते हैं अन्धेरा
न गगन न धरती सुन उनकी कथा
सुख की किरण न जाती उनके गलियारें
जहॉ जीवन में नहीं कोई संगीत
जहॉ सांझ कभी नहीं ढलती हैं
ऊषा सुन्दरी होती नहीं प्रतीत
धवल कपासी वर्तिका स्नेहासिक्त
समूची सृष्टि में फैलादे दिव्य प्रकाश
ज्योति किरणें अवतरित हों क्षिति पर
इस अंधियारे में अब घुटता है सांस
नफरत की चल रही काली अंधियां
सावन के बादल अब बरसातें आग,
सन्त ही जला सकते हैं प्रेम चिराग
बड़े से बड़ें अन्धेरे से लड़ने की
एक मिट्टी का दीया सार्थक हैं
संघर्ष जीवन, नव आशा प्रेरणा पुंज
छत्रवाल, साहस बिन जन्मं निरर्थक हैं

जगदीश प्रसाद छत्रवाल
आध्यात्मिक संत्संग प्रकाशन, सत्संग मार्ग,
विराटनगर,जयपुर राजस्थान

जिम्मेदारियाँ

न पांव में चप्पल
न खेतों में फसल
किन्तु/उसके सूखे तने सरीखें शरीर पर जुड़ी
एक जोड़ी आंखों में
लहराता है/उम्मीद का एक दरिया
मेरे देश का/यह है हरिया
नाम दर्ज हैं जिसका/ लक्ष्य समूह सूची में जरुर
अब भी उसके खेतों में नहर और
नलकूप का पानी हैं दूर
कुछ ऐसी है/उसकी तरक्की की कहानी
घनिक लेते हैं/गांव में उसके सपनों का लाभ
खेतों में छायी रहती हरियाली
वह सुनता है/नित दिन गाली
देश ने प्रगति की रेखांए खिंची हैं/
कुछ ऐसी हुजुर
नतीजा/ आपके नज़रों के सामने हैं
हरिजन नाम से सबको हो गया/ हैं
इतना प्यार
उसको मिलने वाली सुविधाओ से
बेहिचक/बेखौफ
भरने लगे हैं/कुछ लोगो के घर
चौबारे और खेतों की दरार
इसलिए यह मत पूछिए
अब और उस बेचारे का हाल
कागजों पर जो जिन्दा है
एक-एक दाने के लिए मीलों बना फिरता परिन्दा है
फिर भला सामाजिक सरोकारें से
किसे हो सकता हे इंकार
गरीबों/बेसहारों की सेवा में
मुफस्सिल से सचिवालय तक
कार्यरत है/सामाजिक न्याय वाली
बिचौलियों की सरकार
यही सच है
गुलामी के दौर सक हीं अधिक भयावह
दो मुहे लोगो के
शिकंजे में फंस चुके हैं
हम और आप
आश्वासनों के थपेड़ें सहते
आशा-निराशा के धागे बुनते
जीने-मरने की गाथाएं सहेजते
एक दिन यह उम्र भी हो जाएगी तमाम
अब/जरुरी है/जिम्मेदारियां अपनी कुछ तो समझिए
बदलाव की खातिर
संभावनाओं से पूर्ण मार्ग कोई नया चुनियें

डॉ. तारिक असलमं तस्नीम
निदेशक, भारतीय साहित्य सृजन संस्थान, ६/२,
हारुन नगर कॉलोनी, फुलवारी शरीफ
पटना-८०१५०५

☺पत्नियां अपने पतियों के लिए और पति अपनी पत्नियों के लिए लिबास है। (कुरआन-२:१८७)

☺बुराई देखने वाला हमेशा घाटे में रहता है। महात्मा बुद्ध

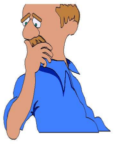

राजरानी चाय

जरा हंस दो मेरे भाय

☠एक आदमी ने अपने दोस्त की सालगिरह पर तीन सौ रुपए की एक बोलने वाली चिड़ियां तोहफें में दी. पार्टी के तीन-चार दिन बाद वह दोबारा अपने दोस्त से मिले और पूछा-क्यों भई, चिड़िया कैसी लगी?
दोस्त ने जवाब दिया-बहुत अच्छी.
लेकिन नमक थोड़ा ज्यादा हो गया था.

☠ रोहित (सोहन से) क्या कर रहे हो?
सोहन- अपनी बीबी को पत्र लिख रहा हूं.
रोहित-यार, तुम्हें तो लिखना भी नहीं आता हैं.
सोहन-हॉ, पर मेरी बीबी को भी तो पढ़ना नहीं आता.

☠ मॉ (बेटे से)–तुमने यह यपत्र लेटर बॉक्स में क्यों नहीं डाला?
बेटा–मॉ, मैं सुबह से शाम तक इध र–उधर घूमता रहा, पर शहर के सभी लेटर बॉक्स में ताले लगे हुए थें. फिर मैं कैसे पत्र डालता?

☠कवि हृदय डाक्टर (अपने मरीज से)-क्यों भाई रात निद्रा देवी आई थीं?
मरीज-पता नहीं सर, मैं काफी पहले सो गया था. हो सकता है उसके बाद आई हों.

☠प्रेमी(प्रेमिका से)-आज के बाद हाथों मे मेंहदी मत लगाना, नहीं तो पुलिस पकड़ कर ले जाएगी.
प्रेमिका-पुलिस क्यों पकड़ेगी?
प्रेमी-अखबार में इश्तिहार आया है कि पुलिसं रंगे हाथ अपराधी को पकड़ना चाहती हैं.

☠अध्यापक- बच्चो, पायजामा कौन-सा बचन है?
हरभजन-ऊपर से एक वचन और नीचे से बहुवचन.

☠अध्यापक- बच्चों, बिना दांत वाले दो जंतुओ के नाम बताओं?
छात्रः महाशय, दादा और दादी.
नेता (डॉक्टर से)- मेरी रिर्पोट को मेरी भाषा में समझाएं.

चुटकुले भेजिए और पाइए राजरानी चाय के पैकेट मुप्त

अच्छे चुटकुले भेजने वाले व्यक्ति को राजारानी चाय की तरफ से ५ किलों, २ किलों, १ किलों, ५०० ग्राम, २५० ग्राम के चाय पैकेट मुफ्त पाइए.

कहीं आप उनमें से तो नहीं?

- **जो** इंसान अपनी गाड़ी में बच्चे के रोने की आवाज का हार्न बजाते हैं वो यह नहीं समझते कि सुनने वाले पर क्या गुजरेगीं.
- **जो** दूसरों की नीचा दिखाकर, खुद महान होने का दावा करते हैं.
- **जो** दूसरों की चीजों की कदर न करते हुए उन्हें पूरी तरह इस्तेमाल करते हैं.
- **जो** कार्यालय मे विलम्ब से आने पर भी अपने आने का समय गलत लिखते हैं.
- **जो** कार्यालय में बैठकर कार्य तो किसी और का करते हैं, लेकिन तनख्वाह कार्यालय से लेते हैं.
- **जो** देर हो जाने के डर से किसी अंधे को सड़क पर कराना, बोझ समझते है और इसांनियत का तकाजा भूल जाते हैं.
- **जो** बस में चढ़कर लपककर सीट पकड़ लेते हैं और पास खड़े वृद्ध या वृद्धा को बैठने नही देतें.

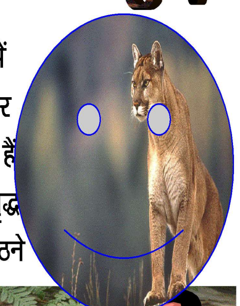

- **जो** अपने बूढ़े मां-बाप को सर का बोझ समझते हैं.

दाउजी, द्वारा जनहित में जारी

राजा हो या रंक, सबकी पसंद राजरानी चाय

हमारे अन्य प्रोडक्टः**राजरानी सब्जी मसाले, राजरानी हल्दी, राजरानी लाल मिर्च, राजरानी सेवई, राजरानी ऑवला चूर्ण, राजरानी चटपटा, राजरानी हीग, राजरानी मीट मसाला,**
निर्माताः श्री पवहारी इण्डस्ट्रीज,इलाहाबाद

गर्भनिरोध के कुछ उपाय

✍ श्रीमती मोना द्विवेदी, सेक्स स्पेशलिस्ट

गतांक से आगे......

☞अपनी डॉक्टर पर पूरा विश्वास करें, और बार-बार डॉक्टर ना बदलें.

☞ जिस डॉक्टर को आप दिखा रही हैं, उसी से प्रसव करवाएं.

☞नियमित डॉक्टर के पास आपकी केस हिस्ट्री होती है, इससे प्रसव के दौरान किसी भी जटिलता का वह आसानी से समाधान कर सकती हैं.

☞ अगर आपको पहले गर्भ के दौरान समस्या रही हो या परिवार में किसी बच्चे में जन्मजात दोष रहे हो, तो भी गर्भधारण से पूर्व काउंसलिंग जरूरी हैं.

☞अगर जरूरी समझें या आपके मन में गर्भावस्था या भावी शिशु को लेकर कुछ दुविधा हो, तो किसी प्रोफेशनल काउंसलर से मदद लें. वह आपके मन की दुविधा को दूर करने का प्रयास करेंगीं.

☞घर के लोग आपकी मानसिक तथा भावनात्मक दोनों अवस्थाओं को ठीक से समझ सकते हैं, अतः उनसे अवश्य बात करें.

☞गर्भावस्था से पूर्व परामर्श लेने से आप बाद में आने वाली बहुत सी कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार होगीं.

☞परामर्श लेने से आपको बहुत सी ऐसी जानकारी मिलेगी, जिनके अभाव में आपको मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता हैं.

☞ आप मां बनना चाहती है,इस निर्णय में आपके पति भी पूरी तरह शामिल होने चाहिए, तभी आप इसका पूरा सुख उठा सकेंगी.

☞गर्भावस्था के दौरान अपनी डॉक्टरी जांच व काउंसलिंग के लिए पति के साथ ही जाएं. उन्हें आपकी शारीरिक व भावनात्मक अवस्था की जानकारी रहनी चाहिए.

☞गर्भधारण से पूर्व अपनी आर्थिक अवस्था अवश्य देख लें.

☞आजकल युवा दंपति विवाह के बाद सुख-सुविधा के साधनों को एकत्र करनें के बाद ही परिवार बढ़ाने की योजना बनाते हैं.

☞गर्भावस्था व प्रसव के दौरान खर्चे काफी बढ़ जाते हैं, अनेक टेस्ट करवाने होते हैं, दवाओं व खानपान का विशेष ध्यान रखना होता हैं.

☞नियमित समय पर अपनी डॉक्टरी जांच, अल्ट्रा साउंड व खून की जांच करवानी होती है, जो काफी मंहगी होती हैं.

☞कभी-कभी अचानक सिजेरियन करवाने की नौबत भी आ जाती हैं, जिससे बजट एकदम गड़बड़ा सकता हैं.

☞यदि आप और आपके पति ये ख्र्वे वहन करने की स्थिति में ना हो, जिससे बजट इंतजार करें. एक अनुमानित बजट बना कर ही गर्भधारण की योजना बनाएं.

☞शिशु की देखभाल, स्कूल आदि के खर्चो को ध्यान में रखते हुए शुरू से फिक्स्ड डिपॉजिट या जीवन बीमा में निवेश करें, ताकि वक्त आने पर आप पैसों की मोहताज ना रहें.

☞गर्भधारण से पूर्व स्त्रियों को अपना स्वास्थ्य परीक्षण अवश्य कराना चाहिए.

☞आर.एच. फैक्टर की जांच के लिए पति-पत्नी दोनों अपना रक्त परीक्षण अवश्य कराएं.

☞कभी-कभी महिला का ब्लड ग्रुप आर.एच. नेगेटिव और उसके पति का आर.एच. पॉजिटिव होता है. अगर उनके गर्भस्थ शिशु का ब्लड ग्रुप आर.एच. पॉजिटिव है, ऐसी स्थिति में पहला बच्चा तो सामान्य हो सकता है, लेकिन अन्य बच्चों के जन्म में गंभीर समस्या का सामना करना पड़ सकता हैं.

☞महिला का ब्लड ग्रुप आर.एच. नेगेटिव होने पर पुरूष के रक्त की जांच अवश्य की जाती है. उसके भी आर.एच. पॉजिटिव होने पर गर्भावस्था के दौरान मां के खून से विशेष जांच इंडायरेक्ट कूंब टेस्ट किया जाता हैं.

☞एबॉर्शन या डिलीवरी के तुरंत बाद छत्तीस घंटे के अंदर एटी.डी का टीका लगाना जरूरी हो जाता हैं.

☞भावी मां को नियमित रूप से ब्लड प्रेशर की जांच करवानी चाहिए.

☞एच.आई.वी वायरस के लिए भी परीक्षण करवाएं.

☞इसके अतिरिक्त डायबिटीज के लिए ब्लड शुगर की जांच करवाएं.

स्वास्थ्य समस्याएं

डॉ. श्रीमती पी. दूबे

प्रश्नः हमारे फेमिली डाक्टर ने मेरे दस साल के लड़के को जांच के बाद कहा है कि उसे हाई ब्लड प्रेशर हैं. क्या बच्चों में भी उच्च रक्तचाप की बीमारी होती हैं. इसके क्या कारण हो सकते हैं. हम लोग बहुत चिंतित हैं. इसका कहां इलाज कराना चाहिए. महेन्द्र प्रकाश, नई दिल्ली

उत्तरः लगभग आठ से दस प्रतिशत बच्चों में उच्च रक्तचात होने के आंकड़े उपलब्ध हैं. जैनेटिक, फैमिलीयल, शरीर में मोटापन तथा गुर्दो में संक्रमण या बनावट के नुख्स उच्च रक्तचाप के प्रमुख कारण हैं. सबसे पहले आज बच्चे के खान-पान तथा उसकी दिनचर्या को अनुशासित करें. यदि बच्चा मोटा है तो उसका वजन घटाने का प्रयास करें. इस बीच एक-एक हफ्ते के अंतराल पर दो तीन बार बच्चे के रक्तचाप की जांच कराएं. यदि रक्तचाप बराबर ऊंचा रहता है तो आप पीडियाट्रिक नेफ्रोलोलिस्ट से संपर्क करें.

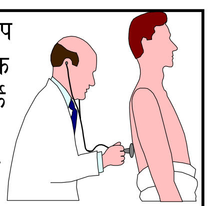

प्रश्नः मेरे आठ साल के लड़के के पैर के अंगूठे में पिछले छः महीने से घाव हैं. जो किसी भी इलाज से ठीक नहीं हो रहा हैं. राजेन्द्र यादव, बिहार

उत्तरः आप अपने बच्चे के पीठ के निचले हिस्से के स्पाइन का एक्स-करे कराएं. स्पाइन बाइफिडा आकल्टा नामक जन्मजात विकृति के प्रमुख लक्षण आपके बच्चे की बीमारी के लक्षणों से बहुत मिलते-जुलते हैं. यदि एक्सरे में कोई विकृति है तो तुरंत न्यूरों सर्जन से संपर्क करें. सी.टी. या एम. आर. स्कैन द्वारा स्पाइना बाइफिडा का निदान सफलतापुर्वक किया जाता है और जल्दी से जल्दी आपरेशन द्वारा इसे ठीक किया जा सकता हैं.

ढोंगी

उसका दिमाग फिर गया. उसने अपने सारे कपड़े चीर-चीर कर डाले. अंतिम चिथड़ा तक बदन से उतार फेंका. वह नंग-धडंग होकर अपना जीवन व्यतीत करने लगा. लोगों ने उसे पागल कहना शुरू कर दिया.

धीरे-धीरे किसी ने यह अफवाह फैला दी. यह तो पहुंचा हुआ साधू है. इसे अपूर्व सिद्धियां प्राप्त हुई हैं. लोग उसे सच्चा साधू मान कर पूजने लगें. उसके मुँह से निकले अन्ट -शन्ट लफ्जों से कुछ लोगों का भला होने लगा.

एक दिन उसका दिमाग फिर सही ठिकाने आ गया. उसे अपने नंगेपन का अहसास हुआ. वह शर्म और आत्मग्लानि से भर उठा. उसने तुरंत अपने नंगे बदन पर कपड़े लपेट लिए और फिर कभी नहीं उतारें.

"साला ढ़ोगी निकला." अब लोग कह रहे थें.

कालीचरण प्रेमी
ए-१०६, बाग कॉलोनी, शास्त्री नगर, गाजियाबाद-२०१००२, उ.प्र.

आदमी

डॉक्टर सतीश एक दिन अपने बेटे के अध्ययन कक्ष में जा घुसे. जो मेडिकल कम्पीटिशन की तैयारी कर रहा था. वहॉ रखी पड़ी प्रत्येक पुस्तक को डॉक्टर साहब ने उलट पलट कर देखा. पत्र-पत्रिकाओं पर भी एक नजर डाली. खूब खुश हुए क्योंकि वे सभी कम्पीटिशन से संबंधित थे. मगर एक जगह ज्यों ही नजर पड़ी, उन्हें काफी हैरानी हुई. वहॉ हिन्दी की कई साहित्यिक पत्र-पत्रिकाएं रखी थी-हंस आजकल, कथा देश, समर लोक, आदि.

"बेटा अरूण" डॉ. सतीश ने बेटे का ध्यान अपनी ओर खींचा.

"क्या है पापा?" अध्ययन में डूबा खोया अरूण ने सिर उठाकर पापा की ओर निहारा.

"तुम्हारे अध्ययन कक्ष में हिन्दी की पत्रिकाएं देख रहा हूँ. किसकी है यें?"

"मेरी हैं."

"तुम्हारी?" पापा चकित थें.

"हॉ मेरी! मैं जब कंपीटिशन की पुस्तकों को पढ़ते-पढ़ते मानसिक रूप से थक जाता हूं तो समय निकाल कर बीच-बीच में इन्हें चाव से पढ़ता हॅं. सुकून और ताजगी दोनों मिलती हैं, इनसे."

"नहीं बेटे," डॉ० सतीश डांट कर बोले, "ये पत्रिकाएं तुम्हारे कैरियर को बरबाद कर देगीं. तुम डॉक्टर बनने से वंचित रह जाओगें."

"बिल्कुल नही पापा." आत्म विश्वास से भरकर अरूण बोला. "मैं डाक्टर जरूर बनूंगा पापा. और हॉ, ये पत्रिकाएं हमें सही अर्थ में आदमी बनना सिखाती हैं. डॉक्टर बनकर मुझे इलाज भी तो आदमी का ही न करना हैं पापा."

राधे लाल 'नवचक्र'
तोता साह लेन, हसनगंज, मिरजान हाट, भागलपुर, 812005, बिहार

पहचान

बाहर से
जो दिखाई देता है
उसे छोड़कर
किसी और को नहीं
खुद आदमी को
अपनी ही
गहराई में उतरना होगा
तब हो सकेगी
आदमियत की पहचान

राजेन्द्र शेखावत
लाल हवेली, ख्याली,झुझुनूं, राजस्थान

वैश्य बंधु पत्र–पत्रिकाओं की डायरेक्टरी का प्रकाशन

अ.भा. वैश्य महासम्मेलन म.प्र. के प्रचार मंत्री वयोवृद्ध कर्मठ समाजसेवी भाई घनश्यामदास गुप्ता ने वैश्य बंधुओं द्वारा संचालित / प्रकाशित / संपादित सभी प्रकार की दैनिक, सप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक, पत्र–पत्रिकाओं की जानकारी का संग्रह कर उसे प्रदेश नगर वार छांट कर पुस्तिका के स्प में प्रकाशित करने की एक अनूठी योजना बनाई हैं. इस कार्य में उन्हेंाने सभी भाईयों का सहयोग मांगते हुए अपील की हैं कि जिस भाई के पास जो भी जानकारी हो वह उनको 200, प्रभुनगर, अंकुर नर्सिग होम मार्ग, भोपाल, म.प्र. 462001 दूरभाष– 0755–542413 पर भिजवानें का कष्ट करें. प्रकाशक बन्धु इस समाचार को छापकर उस अंक की एक प्रति उन्हें भेजकर सहयोग देते हुए अनुग्रहीत करें जिससे उसके आधार पर उन्हें सूची बनाने में सुविधा हो. एंट्री निःशुल्क हैं. प्रकाशन पश्चात एक पत्र संग्रहालय में सुरक्षित रखने की योजना भी हैं.

बदी के मौके बार बार मिलेंगें नेकी करने का मौका बहुत कम मिलता है। वाल्टर

जिस घर की औरत उदास रहती है वहॉ खुशियां कभी नही आती। शेक्सपियर

श्रीरुद्र मंत्र का पाठ और शिवजी व राहू की पूजा करने से सारे अनिष्ट दूर हो जाते हैं

नक्षत्र आर्द्रा शिव भगवान के रौद्र रुप का प्रतीक हैं. रौद्र का अर्थ है रुलाने वाला यानी इस नक्षत्र में अत्यधिक प्रयास करने पर भी आप निश्चित रुप से सफलता की कामना नहीं कर सकते. अकस्मात स्थिति को बदलने वाले राहू के इस नक्षत्र में कभी भी शुभ-अशुभ घट जाता है. खुशी या गम आपके हिस्से में कब आ जाए, यह कहना मुश्किल हैं. इसकी आभा एक हीरे की चमक ही तरह हैं जो अकेला ही आकाश में दिखता हैं. इस नक्षत्र के देव स्वयं शिव भगवान हैं.

आर्द्रां नक्षत्रमें पैदा हुए पुरुष दुबले-पतले या मोटे-ताजे भी हो सकते हैं. कद ठिगना या लंबा हो सकता है. राहू का यह नक्षत्र कब क्या रुप धारण कर ले, यह कहना आसान नहीं. किंतु आपके व्यक्तित्व का कमाल, सदा कायम रहता हैं. किसी भी कार्य को समझदारी, ईमानदारी व फुरती से करना लोग आप से सीखते हैं. पराक्रमी और शौर्यवान होते हैं. लेकिन वाद-विवाद या झगड़े करने में भी माहिर होते हैं. दूसरों की प्रवृत्ति को समझने की कला भी इन्हें आती है और इसका फायदा भी उठाते हैं. अपना काम हो जाने पर दूसरों की तरफ मुंह मोड़ लेना इनके लिए आसान बात हैं. व्यवहार कुशल व मतलबी होते हैं.

हर विषय की जानकारी प्राप्त करना इस नक्षत्र में जन्में व्यक्तियों की खासियत होती हैं. लेकिन इस जानकारी का पूरा लाभ नहीं उठा पाते हैं. कार्यकुशल होने के बावजूद विफलता का सामना भी इन्हें करना पड़ता है और इस वजह से मानसिक परेशानी पैदा हो जाती हैं. परिस्थिति का मुकाबला करने की क्षमता के कारण परेशानी से जल्दी छुटकारा भी पा लेते हैं. एक ही समय में अनेक कार्य करने की क्षमता भी होती हैं. दूसरों के विचारों का सम्मान करते हैं. शोध आदि कार्यो में आर्द्रा नक्षत्र वाले अधिक सफल होते हैं क्योंकि इनमें किसी भी कार्य को पूरी तरह से समझकर अंजाम तक पहुंचाने की इच्छाशक्ति होती हैं. इन्हें अक्सर अपने जन्म स्थान से दूर के शहरों में या विदेश में जीविका साधनों के लिए जाना पड़ता हैं. ३२ से ४३ वर्ष का समय इनके कैरियर का सुनहरा दौर होता हैं. जहाजरानी, ट्रांसपोर्ट, संचार माध्यमों, डिपार्टमेंटल स्टोर या दलाली के कार्यो से अधिक धन अर्जित कर सकते हैं.

बुध की राशि मिथुन में यह नक्षत्र पड़ता है, अतः राहु के स्वामित्व में होने के बावजूद इस नक्षत्र में पैदा होने वालों में बुध के गुण पाए जाते हैं. हंसमुख, मिलनसार किंतु बदलाव के शौकीन होते हैं. शादी के मामले में अकसर देरी करना पसंद करते हैं. यदि शादी जल्दी हो जाए तो पत्नी से मतभेद रहता हैं. अपनी समस्याओं को अपने तक ही सीमित रखते हैं, जीवन साथी तक को भी नहीं बतातें. देर से शादी होने पर अच्छे जीवन साथी साबित होते हैं और अकसर कई मामलों में पत्नी इन पर काबू रखती हैं. इस नक्षत्र वालों की सूर्य, मंगल, चंद्र की राशि या नक्षत्रों में पैदा होने वालों से शत्रुता हो जाती हैं. यदि आपका सूर्य भी इसी नक्षत्र में हो यानी आपका जन्म २१-२२ जून से ५-६ जुलाई के मध्य हो, तो आर्द्रा नक्षत्र वाले उच्च शिक्षा ग्रहण करते हैं. गणित आदि विषयों में अधिक रुचि होगी. स्वभाव से चुलबुले और नरम हृदय के होते हैं. ज्योतिष और अन्य शास्त्रों का गूढ़ ज्ञान भी इन्हें प्राप्त हो जाता हैं. अपनी सेहत का ध्यान नहीं रख पाते, छोटी-मोटी बीमारी की परवाह नहीं करते. इसी कारण रोग बढ़ सकता हैं. अकसर इनको पक्षाघात, हृदय रोग, दांतो के रोग, कान व गले के रोगों का सामना करना पड़ता हैं.

यदि आप इस नक्षत्र में जन्मी हैं, तो आपके नैन-नक्श तीखें व उभरे होते हैं. पुरूष की तरह आपके हाव-भाव होते है. आपकी सुंदरता, लंबी नाक और आकर्षक व चमकीली आंखे दूसरों के दिल के पार उतर जाती हैं. स्वभाव से शांत रहने की चेष्टा रहती है, दूसरों की मदद करने में जहां आगे रहती हैं वहीं उनकी त्रुटियां निकालने में भी पीछे नहीं रहती. खर्चीली भी अधिक होती हैं. पढ़ाई-लिखाई में पुरूषों के क्षेत्र में जाना चाहती हैं. विज्ञान व शिक्षा के क्षेत्र में इनको अकसर उच्च पदों पर देखा जा सकता हैं. बिजली व अन्य उपकरणों जैसे कम्प्यूटर आदि में महारत हासिल करना या प्रबंधन के क्षेत्र में इनका बोलबाला रहता हैं. एक अच्छी सलाहकार भी सिद्ध होती हैं. शादी के मामले में देरी और दांपत्य जीवन में कड़वाहट का सामना करना पड़ता हैं. पति या ससुरालियों का प्यार कम ही नसीब होता हैं. किसी का संबंध विच्छेद या तलाक इन्हीं कारणों से हो जाता हैं. यदि आपका चंद्र भी आर्द्रा नक्षत्र में मिथुन राशि में आ जाए, तो जीवन में अभाव का सामना करना पड़ जाता हैं. जिद्दी व घमंडी भी होती है आप. इसलिए औरों की नजर में दुगुर्गी कहलाती हैं. धन का अपव्यय हो तो भी अपनी महत्वाकांक्षा पूरी करके ही दम लेती हैं. बीमारी के कारण आयु कम हो जाती हैं. आपको अपनी माहवारी, फेफड़ों, खून के रोगों व गर्भाशय की जांच अकसर करवानी चाहिए.

जीवन में अनिष्टों को दूर करने के लिए स्त्री-पुरूष दोनो को राहू की पूजा, श्रीरूद्र मंत्र का पाठ व शिवजी की पूजा करनी चाहिए. ४ से ६ रत्ती का मोती चांदी में जड़वाकर बाएं हाथ की अंगुली में सोमवार सूर्यास्त के बाद पहनें, ऐसा करने से जन्म के समय या वर्तमान गोचर में आर्द्रा नक्षत्र में चलते हुए ग्रहों को कुप्रभावों से बचाव होता हैं.

महिलाओं के पुरुषों पर वैसे ही अधिकार है जैसे कि पुरुषों के महिलाओं पर है, और पुरुषों को आंशिक दर्जा प्राप्त है।

(कुरआन—2—228)

जूट उद्योग में संभावनाएं

भारत में जूट सोने के रेशे के नाम से पुकारा जाता हैं. भारतीय औद्योगिक व्यवस्था में जूट उद्योग का महत्वपूर्ण स्थान हैं. कपास के भांति जूट से भी खुरदुरा और मोटे किश्म का कपड़ा तैयार करने में भारत प्राचीन काल से परिचित रहा हैं. पहले इससे पर्दे बिछाने के टाट और बोरे तैयार किये जाते थे. प्रायः सभी घरों में इसका प्रयोग होता था. विद्यालयों में जब कुर्सी मेज नहीं थें तो टाट की पट्टी में बैठकर विद्यार्थी विद्याध्ययन करते थें. अब जूट उत्पादों में आश्चर्य जनक विविधता आ गयी हैं. इससे रंगबिरंगे पर्दे, दरियां, फर्श, बिछावन, सोफे के कपड़ें, वाटर प्रुफ तथा सजावट की वस्तुएं भी तैयार की जी हैं.

भारतीय उद्योग कुटीर प्रणाली पर आधारित यह व्यवसाय बड़ा ही महत्वपूर्ण रहा था, आधुनिक जूट मिल की स्थापना सर्वप्रथम १८५५ ई. में कलकत्ता के समीप रिसरा नामक स्थान पर एक अंग्रेज जार्ज आक्लैण्ड ने बंगाली व्यापारी सुन्दर सेन के साझेदारी में स्थापित की और इसके बाद कलकत्ता के निकट हुगली नदी के आसपास इस प्रकार की अन्य मिलें स्थापित की जाने लगी.

सन् १९२५-२६ के दौरान जूट मिलों की संख्या लगभग १०० हो गयीं. द्वितीय महायुद्ध के प्रारम्भ में इस उद्योग को पुनः विकास का अवसर प्राप्त हुआ और त्रिपुरा के तराई क्षेत्र में जूट की खेती का प्रयास किया जा रहा हैं. विश्व के जूट उत्पादन का ४२ प्रतिशत भाग भारत में उत्पन्न हो रहा हैं.

पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत सरकार जूट क्षेत्र के विकासार्थ समुचित प्रयास कर रही हैं. प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में विगत दो दशकों मे तेज प्रयास किया गया हैं. इस समय भारत वर्ष में ६० जूट मिलें कार्य कर रही हैं और एक लाख ६० हजार व्यक्तियों को प्रत्यक्ष रोजगार मिल हुआ हैं. इलाहाबाद एवं ग्रामीण क्षेत्रों के लोग इन उद्योगों में नौकरी कर रहे हैं. इस उद्योग में भारत सरकार नें ३५० करोड़ रुपये की पूंजी लगा रखी हैं और ४५ हजार करघे लगे हुए हैं. जो जूट तैयार करते हैं. कुल जूट उत्पादन का ६२ प्रतिशत भाग बोरा बनाने के लिए २० प्रतिशत भाग टाट बनाने के लिए, १८प्रतिशत भाग दरियों, गलीचों, रंगबिरंगे, पर्दे सोफों के कपड़ें आदि बनाने में प्रयुक्त होते हैं. भारत से जूट का तैयार माल संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका न्यूजीलैण्ड, अर्जेन्टाइना एवं यूरोपीय राष्ट्रों तथा मध्य पर्व एंव सुदुरपूर्व के देशो में भेजा जाता हैं और विदेशी मुद्रा भी भारत इससे अर्जित करता हैं.

अमूल्य दृष्टिदान

नेत्रदान महादान जीवनोपरान्त
बदल सकती हैं एक से दूसरे की जिन्दगी
नेत्र है दो-दो फिर भी अंधेरा
खोया सूरज खोया सबेरा
काली दोपहरी वैसी ही रात
बांटों उजाला तो बन जाये बात
आप सी मुस्कान चाहिए
मुझे नेत्रदान चाहिए
मैं भी देखूँ कैसी है दुनिया
कैसा है मुन्ना कैसी है मुनिया
मैं भी अंधेरे की दिवाल फांद
देखूँ तो कैसा दिखता है चांद
नहीं जहान चाहिए
मुझे नेत्रदान चाहिए
मेरे जीवन में हो खुशियों का फेरा
कृपा आपकी हो तो होवे उजेरा
कार्य पुण्य का है आप भी है महान
एक मात्र विनती हैं ले इसको मान
एक वरदान चाहिए, मुझे नेत्रदान चाहिए

डॉ० नरेश माथर बंधु
संयोजक, स्मृति जागृति मंच, बहराइच

छलनाँए

कुछ आदत बाहर की
कुछ आदत भीतर की
छलती है रोज।
कौन धरेगा धीरज अंधकार बीच
रह जाते मौन सभी, आँखों को मीच
एक शरारत तन में,
ढलती है रोज।
मचल रहा काल व्याल, उगलता जहर
हर तनाव लाती है प्रलय दोपहर
बंधन की ये कड़ियां
विपदाओं की लड़ियाँ
पलती है रोज!
भूल गई संवदेन आज कहीं भूल
जीवन में संवेदन आज कहीं भूल
जागे सारे विकार,
बेधती रही बयार
खलती हैं रोज!
लाता विध्वंस सदा अनचाहा ज्वार
लाचारी को जीता रहता संसार
रीत गई इच्छाएँ
बर्फीली प्रतिमाँए
गलती है रोज।

डॉ. भगीरथ बड़ोले
२८६, विवेकानंद कॉलोनी,फ्रीगंज, उज्जैन, म.प्र.

आवश्यकता हैं

इलाहाबाद से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका **'विश्व स्नेह समाज'** एवं हिन्दी साप्ताहिक **द हंगामा इंडिया** हेतु हेतु भारत के विभिन्न क्षेत्रों मे संवाददाता, ब्यूरो, एजेन्ट, विज्ञापन प्रतिनिधियों
कार्य करने के इच्छुक व्यक्ति जबाबी लिफाफे के साथ लिखें:
संपादक, विश्व स्नेह समाज,

दुल्हन के लिए बदलवा दिया भविष्यफल

हांगकांग. विवाह करते समय लोग भविष्यफल पढ़ कर कई बार अपना जीवनसाथी बदल लेते हैं, लेकिन यहां एक युवक ने अपनी प्रेमिका को पाने के लिए बाकायदा भविष्यफल ही बदलवा दिया. 28 वर्षीय हैनी चुएंग जिस लड़की से विवाह करना चाहता था, वह स्थानीय अखबार में आने वाला भविष्यफल बेहद आस्था के साथ पढ़ा करती थी. इसी के चलते उसने साउथ चाइना मार्निग पोस्ट के स्टाफ को मना लिया कि वे रविवार को अखबार में आने वाले भविष्यफल में मीन राशि में एक खास पंक्ति लिखं दे. वहां के लोग इसके लिए मान भी गए. उन्होनें अंत में एक पंक्ति लिख दी–इरीन ली नाम की एक महिला–जिसका जन्म दिन आज ही हैं का अपने प्रेमी हैनी को लेकर सपना पूरा होने वाला है. वह आज उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखेगा. 30 वर्षीय टीचर इरीन ने जब यह पढ़ा तो हैनी वहीं उसके साथ ही था. उसने फौरन घुटनों के बल बैठकर विवाह का प्रस्ताव रख दिया. लेकिन इरीन ने हां करने में काफी समय लगा दिया. कम से कम हैनी को तो यही लगा. उसे कुछ घंटे सदियों के बराबर लग रहे थें. हैनी का कहना है कि वह स्वभाव से रोमांटिक नहीं है, लेकिन इस तरह के विवाह प्रस्ताव की सलाह जब उसे दी गई, तो वह फौरन मान गया.

अब बात करेगी कपड़े धोने की मशीन

कपड़े धोने का रूटीन काम बहुत से लोगों को पंसद नहीं होता. ये काम ऐसा है, जिसमें कोई रोचकता पैदा करना भी मुश्किल होता हैं. ऐसे में कोइ ऐसी मशीन आ जाए जो खुद ही बातचीत करने लगे, तो शायद मैले कपड़ो के आसपास भी वातावरण कुछ बदला हुआ लगे.

हाल ही में इलेक्ट्रोलक्स केल्विनेटर ने एक ऐसी मशीन बनाई है जो कपड़े तो धोएगी ही बात भी करेगी. दावा किया जा रहा है कि यह दुनिया की पहली बोलने वाली वाशिंग मशीन हैं. जल्दी ही भारत में लांच की जाने वाली यह मशीन अंग्रेजी और हिंदी के 90 से ज्यादा वाक्य बोल सकती हैं. मशीन कपड़ें धोने वाले को बताएगी, कब उसे पानी डालना है, कब डिटजेंट और कब आराम से बैठकर कपड़े धुलने का इंतजार करना हैं.

ग्राहकों के आग्रह के कारण यह मशीन भारत में बिक्री के लिए लाई जा रही हैं.इसकी एक वजह यह बताई जा रही है कि यहां बहुत से लोग यह जानते ही नहीं कि इसका इस्तेमाल किया कैसे जाता हैं.

२१७ नंबर का जूता

डेब्रेसेना हंगरी, किसी को अगर जूते के बड़े से बड़े साइज का अंदाजा लगाने को कहा जाए तो कोई भी 70–80 नंबर से ज्यादा का अंदाजा नहीं लगा पाएगा. लेकिन किसी को 217 नंबर के जूते के आकार के बारे में सोचने को कहा जाए तो उसके लिए कल्पना करना मुश्किल हो जाएगा कि दिखने में यह जूता कितना बड़ा लगेगा. यहां के जूते के एक कारीगर जोसेफ कोवाक्स ने इतना बड़ा एक जूता बना कर गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्डस में आने की तैयारी कर ली हैं. यह जूता अंदर से लगभग डेढ़ मीटर लंबा है. अभी तक के गिनीज बुक के सबसे बड़े जूते के रिकॉर्ड से यह 15 सेमी. बड़ा हें. इस चमड़े के जूते को बनाने

में 56 वर्षीय जोसेफ ने 43 दिन की अवधि में लगभग 345 घंटे काम किया. इसका वजन 65 किलोग्राम है, जिसमें 10 किलो गोंद, तांबे की 247 कीलें और 87 मीटर धागा शामिल हैं. यह जूता जोसेफ ने उन नए कारीगरों को प्रेरणा देने के मकसद से बनाया है जो इस काम में अब ज्यादा दिलचस्पी नहीं ले रहे हैं. जूते बनाने का धंधा अब खत्म होता जा रहा हैं.

दुबले होने का आदेश

ब्रकलिन. अपना मोटापा कम कर दुबले–छरहरे दिखने के लिए लोग निजी तौर पर कोशिश करते रहते हैं, उन्हें किसी के आदेश मानने की जरूरत नहीं होती, लेकिन यहां सरकारी आदेश जारी कर लोगों को दुबले होने के एक अभियान में शामिल होने को कहा गया हैं.

इधर–उधर की

आप भी इस स्तम्भ के लिए कुछ खास खबरे जो आपके संज्ञान में हो या कोई नया आविष्कार हुआ हो तो हमें भेज सकते हैं.. अच्छी खबर को हम अवश्य ही प्रकाशित करेंगे. अच्छी खबरें के छपने पर हम आपको हजारों रुपये के ईनामी कूपन भी भेजेंगें तो देर किस बात की. कलम उठाइए और लिख भेजिए हमारे पत्रा–व्यवाहार के पते पर.

हम को नहीं यह गम कि तनहाई है रातभर
हमने भी कभी बज्म सजायी है रातभर
जिस रोज यह सोचा कि भुला देंगे आपको
उस रोज याद आपकी आयी है रातभर

कृपया ध्यान दें.....!!

अहमदाबाद से प्रकाशित यह नवोदित कवित्री कुमारी रचना यादव का यह काव्य संग्रह देश की बुराईयों एवं कमजोरी पर करारा प्रहार हैं. जिसमें इतनी कम उम्र की कवित्री रचना जी के विचारों की गहराईयां छिपी हैं. यह एक सराहनीय प्रयास हैं.

समाज की गम्भीर समस्याओं से ओत-प्रोत कविताओं का यह संग्रह ऐसा है जो प्रत्येक आयु वर्ग के पाठकों के लिए रोचक एवं उनके दिलों की गहराइयों को छूने का एक सफल प्रयास हैं.

रचनाकारः रचना यादव

प्रकाशकः शिवशक्ति नंदन प्रकाशन, बी. ए/६, स्टलिंग पार्क सोसायटी, ड्राइव-इन-सिनेमा के पास, अहमदाबाद-३८००५२ **मूल्यः** ५५/- रुपयें

ज्ञानदीप

अहिंसा-जीवदयाशकाहार प्रचारक कवि श्री वी. नारायण स्वामी का ज्ञानद्वीप का यह चतुर्थ संस्करण पूर्णतः अहिंसा, जीवदया एवं शाकाहार को समर्पित हैं. यह कवि के सुविचारों का ऐसा संकलन है, जो जीवन को हिंसात्मक बुराई के दलदल से उबारने एवं ज्ञान के दीप को प्रज्वलित करने में स्वयं में पूर्णतः सक्षम हैं.

साथ ही यह एक ऐसा सग्रह भी है जो प्रत्येक आयु वर्ग को प्रेम एवं अहिंसा का मार्गदर्शन कराता हैं. जिसमें समाज की निशुल्क सेवा का संकल्प निहित हैं.

रचनाकारः श्री वी.नारायण स्वामी

प्राप्ति स्थानः वी.नारायण स्वामी, ५२/१७५, वीरप्पन स्ट्रीट, 'छल्लाणी प्लाजा', साहुकारपेट, चेन्नई-६०००७९

मुल्यः चिंतन मनन प्रचार प्रसार

समीक्षक : श्रद्धा वर्मा

कूपन सं. 2

विश्व स्नेह समाज

कलाम दृष्टि और बायोवेद

जैव प्रोद्योगिकी युग के नाम से चरितार्थ २१वीं शताब्दी में भारत के बारहवें राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलॉम के वर्ष २०२० तक विकासशील से विकसित राष्ट्र होने की कामना करते हैं; उन सब का साक्षात स्वरूप बायोवेद, शोधफार्म प्रभारी राजेश कुमार सिंह अपने खण्ड काव्य 'कलाम दृष्टि और बायोवेद' में किए हैं.

प्रस्तुत खण्ड काव्य 'कलाम दृष्टि और बायोवेद में राजेश कुमार सिहं अधुनातन से अधुनातन प्रोद्योगिकी का जो अनुभव अपने काव्य ग्रंथ कृषक खजाना बायोनीमा,आधुनिक जल कृषि, सब्जियो की आधुनिक खेती, लाख की आधुनिक खेती और बायोवेद एक अध्ययन के द्वारा अर्जित किये हैं. उन सबका भरपूर पारदर्शी स्वरूप देखने को मिलता हैं. राजेश कुमार सिह इन तमाम उपलब्धियों के विषय में यह कहना कोई अतिश्योक्ति न होगी कि उनके हृदय में भारत को विकासशील से विकसित राष्ट्र बन जाने की भावना अविस्मरणीय रूप से घर कर गया हैं.

वर्ष २००४ में बायोवेद शोध एवं प्रसार केन्द्र इलाहाबाद से डिस्टिंग्यूस सर्विस एवार्ड एवं २००५ में बायोवेद मेरीट एवार्ड से सम्मानित होने वाले रचनाकार राजेश की कृति सचमुच में कृषि वैज्ञानिकों का अनमोल धरोहर दृगोचर होता हैं.

रचनाकारः राजेश कुमार सिंह

प्रकाशकः बायोवेद शोध संस्थान, इलाहाबाद

लेखक/लेखिकाओं के लिए

1.काग़ज के सिर्फ एक ओर पर्याप्त हाशिया छोड़कर सुपाठय अक्षरों में लिखी अथवा टाइप की हुई रंचनाएँ भेजें।

2.रचना के साथ पर्याप्त टिकट लगा, स्वयं का पता लिखा लिफाफा आना चाहिए। इसके अभाव में, हम रचना से संबंधित किसी भी बात का उत्तर नहीं देंगे।

3. रचना के प्रथम पृष्ठ पर लेखक का पूरा नाम और अन्त में लेखक का पूरा पता अंकित होना चाहिए।

4.हम लेखकों फिलहॉल कोई पारिश्रमिक नहीं देते हैं। लेकिन लेखकीय प्रति के अलावा पत्रिका की एक प्रति लेखक को भेंट स्वरुप भेजेंगें.

संशोधन एवं प्रकाशन के विषय में प्रधान संपादक का निर्णय अंतिम होगा.

लेखको के विचारों से संपादक मंडल की सहमति आवश्यक नहीं हैं.

अपने विशेष रचनात्मक सहयोगियों को प्रत्येक वर्ष सितम्बर माह में पुरस्कृत भी किया जायेगा.

विश्व स्नेह समाज कूपन ऑफर

आप प्रत्येक माह पत्रिका में रु ५/- का एक कूपन पायेंगें जिसे आप जमाकर आप अपने संस्थान, फर्म का विज्ञापन अथवा बंधाई संदेश, वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर सकते हैं. इसके लिए आपको उक्त राशि के बराबर का कूपना अथवा राशि जमा करनी होगी.

शर्तेः १.विज्ञापन रु. १५०/का, बधाई संदेश रु० १००/- से कम का नहीं होना चाहिए.

२. एक अंक की अधिकतम ५ कूपन ही स्वीकार्य होगा.

३. किसी भी तरह के विवाद के संदर्भ में पत्रिका प्रबंधन का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा.

A+ Rated IT Institute

by All India Society for Electronics & Computer Technology

MIIT

MICROTEK INSTITUTE OF INFORMATION TECHNOLOGY

(Direct Admission Notice for Session 04-05)

Affiliated with Makhanlal Chaturvedi University, Bhopal Recog. By U.G.C. & A.I.U

3 Years Full Time Regular Degree Programme

BCA

Bachelor of Comptuer Application

Eligibiliy: 10+2 With any discipline

Fee Structure: Rs. 10,000/- per semester

BSc(IT)

Bachelor of Information Technology

Eligibiliy: 10+2 With Mathmatics

Fee Structure: Rs. 8,000/- per semester

MICROTEK

NIRMAL COMPLEX, MALDAHIYA, VARANASI Tel: 0542-2207001, 2207002,

Fax : 0542-2208248

PGDCA

Post Graduate Diploma in Computer Application

Eligibiliy: Graduation in any disciplineFee : Rs. 7,000/- per semester

Kishore Girls Inter College & Convent School

Reco. By. U.P.Government

ADDMISSION OPEN
From 15 April

Nursery to Class XIIth

- Education by experienced Teachers
- Good Atomosphere For Education
- Limited Students in every Class

Cont.: 82/102, Meera Patti, T.P. Nagar, G.T. Road, Allahabad

Manager
V.N.Sahu

SHYAM LAL INTER COLLEGE

Reco. By: U.P. Government

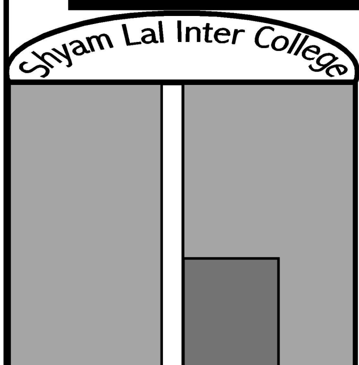

Class K.G-I to 12th For Boys and Girls Science & Art Group

For Detail Contact: **Anil Kumar Kushwaha**
Manager,Chkiya, Kasari-Masari, Allahabad
☎ 2636421 Mo:9839584648